11 पदक विजेता छात्रा का स्कूल में किया अभिनंदन

12 महिलाओं ने चेयरपर्सन को बताए पार्क की समस्याएं

खबर संक्षेप

ट्रेन की चपेट में आने से मौत, नहीं हुई शिनाख्त

बहादुरगढ़। दिल्ली-रोहतक रेल मार्ग पर छोटूराम नगर के नजदीक एक व्यक्ति का शव मिला। ट्रेन की चपेट में आने से व्यक्ति की मौत हुई है। फिलहाल शव की शिनाख्त नहीं हो सकी है। पुलिस ने पहचान के प्रयास शुरू कर दिए हैं। जांच अधिकारी उर्मिला ने बताया कि घटना शनिवार सुबह की है। हमें सूचना मिली कि छोटूराम नगर के नजदीक रेलवे ट्रैक पर ट्रेन की चपेट में आने से किसी की मौत हो गई है। सूचना पाकर मौके पर पहुंचे और जांच शुरू की। मृतक की उम्र करीब 50 वर्ष आंकी जा रही है। उसके कपड़ों से पहचान संबंधित कोई दस्तावेज बरामद नहीं हुआ।

गांजे सहित आरोपी गिरफ्तार, केस दर्ज

बहादुरगढ़। अपराध जांच शाखा 2 ने गांजे सहित एक आरोपी को गिरफ्तार किया है। आरोपी के खिलाफ लाइनपार थाने में केस दर्ज किया गया है। दरअसल, पुलिस को सूचना मिली थी कि बिहार मूल का एक व्यक्ति नशीला पदार्थ बेचता है। फिलहाल वह बामड़ोली अड्डे के पास गांजा लेकर खड़ा है। इस पर टीम वहां गई और आरोपी को काबू किया। राजपत्रित अधिकारी की मौजूदगी में तलाशी लेने पर उसके पास 5.800 ग्राम गांजा बरामद हुआ। आरोपी की पहचान विक्की के रूप में हुई है।

केएमपी पर कैंटर और सुपर कैरी की टक्कर

बहादुरगढ़। केएमपी पर डाबोदा के पास कैंटर और सुपर कैरी गाड़ी की टक्कर हो गई। हादसे में सुपरकैरी गाड़ी बुरी तरह से क्षतिग्रस्त हो गई। उसका चालक बाल बाल बच गया। लाइनपार के निवासी नेपाल सिंह का कहना है कि 2 वह अपनी सुपर कैरी गाड़ी में कंपनी का माल लेकर मानेसर जा रहा था। जब मेहंदीपुर डाबोदा के पास पहुंचा तो गाड़ी का टायर पंक्चर हो गया। इसी दौरान पीछे से एक कैंटर ने टक्कर मारी। इससे मेरी गाड़ी बुरी तरह से क्षतिग्रस्त हो गई और मैं बाल बाल बच गया। उसकी शिकायत पर सदर थाने में केस दर्ज हुआ है।

पुलिस ने शरारती तत्वों को लगाई फटकार

बहादुरगढ़। पुलिस की ओर से पार्कों की निगरानी बढ़ा दी गई। शुक्रवार की रात को भी एक पार्क में बैठे शरारती तत्वों को पुलिस ने कड़ी फटकार लगाकर भगाया। दरअसल, बहादुरगढ़ के पार्कों में नशेड़ियों का बोलबाला रहता है। इस वजह से वारदात की आशंका बनी रहती है। बीते बुधवार को तो शहीद भगत सिंह पार्क में एक युवक की हत्या की गई थी। इसके बाद से पुलिस हरकत में है और पार्कों की निगरानी बढ़ाई गई है। शुक्रवार की रात को राव तुलाराम पार्क में कुछ शरारती तत्व नशे का सेवन कर रहे थे। सूचना मिलने पर पुलिस डंडे लेकर मौके पर पहुंची। पुलिस को देखकर अधिकांश शराबी भाग गए। कुछ हाथ आए तो उनको कड़ी फटकार लगाई गई। आम नागरिकों का कहना है कि पार्कों पर पुलिस का पहरा होना चाहिए। इसी तरह सख्ती जारी रहे तो हालात में सुधार आए।

साइबर ठगी मामले में एक आरोपी गिरफ्तार

झज्जर। साइबर थाना की एक टीम द्वारा पार्ट टाइम जॉब और कम समय में ज्यादा मुनाफे देने का लालच देकर साइबर फ्रॉड करने के मामले में एक अन्य आरोपी को गिरफ्तार किया गया है। साइबर थाना प्रभारी निरीक्षक सोमबीर ने बताया कि बहादुरगढ़ निवासी एक व्यक्ति की शिकायत पर मामला दर्ज किया गया था। उन्होंने बताया कि मामले में पहले अमित को गिरफ्तार कर पुलिस रिमांड पर लिया गया था। पुलिस पूछताछ के दौरान एक और आरोपी का नाम सामने आया है, जिसको पुलिस टीम द्वारा पकड़ा गया है। पकड़े गए आरोपी की पहचान मनीष निवासी राजस्थान के तौर पर की गई है। पुलिस ने उसे कोर्ट में पेश किया, जहां से उसे जेल भेज दिया गया।

सिविल डिफेंस अभ्यास 'ऑपरेशन शील्ड' से प्रशासन ने अपनी तैयारियां जांची, सायरन बजते ही हरकत में आई एजेंसियां

झाड़ली पावर प्लांट पर ड्रोन अटैक से बचाव का अभ्यास किया, रात 8 से 8.15 तक ब्लैकआउट

झज्जर। मॉक ड्रिल के दौरान उपचार के लिए लेकर जाते हुए वॉलिंटियर्स ।

झज्जर। घायलों को ले जाते अधिकारी व जवान।

हरिभूमि न्यूज ⏭ झज्जर

राष्ट्रीय सुरक्षा के प्रति नागरिकों में जागरूकता और आपात परिस्थितियों में जिला प्रशासन की तैयारियों को सशक्त बनाने के लिए डीसी स्वप्निल रविंद्र पाटिल के दिशा-निर्देशन में शनिवार को एनटीपीसी झाड़ली पावर प्लांट में सिविल डिफेंस मॉक ड्रिल 'ऑपरेशन शील्ड' का आयोजन किया गया। इस दौरान पावर प्लांट की एक बिल्डिंग पर ड्रोन हमले की प्रतीकात्मक स्थिति उत्पन्न कर उससे निपटने की तैयारियों का परीक्षण किया गया। सायं पांच बजते ही झाड़ली पावर प्लांट में सिविल डिफेंस अभ्यास शुरु हो गया और ड्रोन हमले की काल्पनिक स्थिति के दौरान चारों तरफ अफरा तफरी मच गई। आपात स्थिति में राहत एवं बचाव कार्यों को अंजाम देने के लिए जिला प्रशासन, सिविल डिफेंस, दमकल विभाग, पुलिस, स्वास्थ्य विभाग, एंबुलेंस सेवाएं तथा अन्य संबंधित एजेंसियों की ओर से त्वरित कार्रवाई की गई। अभ्यास के दौरान सात लोगों को प्रतीकात्मक रूप से मृत तथा आठ को घायल दर्शाया गया। घायलों को प्राथमिक उपचार देकर अस्पताल भेजने की प्रक्रिया को योजनाबद्ध तरीके से अंजाम दिया गया। सिविल डिफेंस अभ्यास के सफल आयोजन के बाद डीसी स्वप्निल रविंद्र पाटिल ने कहा कि यह मॉक ड्रिल ड्रोन जैसे उभरते खतरे के परिप्रेक्ष्य में सुरक्षा और आपदा प्रतिक्रिया तंत्र की तैयारियों को जांचने का एक महत्वपूर्ण अवसर रहा। अभ्यास के दौरान संचार व्यवस्था, आपातकालीन रिस्पांस टाइम, कोआर्डिनेशन, और फील्ड में वास्तविक समय में निर्णय लेने की क्षमताओं का मूल्यांकन किया गया। अभ्यास की शुरुआत शाम पांच बजे एयर रेड सायरन से हुई, जिसके बाद झाड़ली पावर प्लांट में आपात स्थिति की कल्पना करते हुए विभिन्न राहत और बचाव एजेंसियों ने अपनी भूमिका निभाई। प्लांट परिसरों से कर्मियों को बाहर निकाला गया।

दुजाना कॉलेज में की गई मॉक ड्रिल

बेरी। शनिवार को बेरी में दूसरी सिविल डिफेंस एक्सरसाइज ऑपरेशन शील्ड आयोजित गई। इसी कड़ी में दुजाना स्थित राजकीय महाविद्यालय परिसर में डिप्टी इंसीडेंट कमांडेंट एवं एसडीएम रेणुका नांदल की अध्यक्षता में मॉक ड्रिल की गई। उन्होंने कहा कि दूसरी सिविल डिफेंस एक्सरसाइज आपरेशन शील्ड मुख्य उद्देश्य सिविल डिफेंस को एक्टिवेट करना है। एयर स्ट्राइक व ड्रोन हमले के चलते पैदा हुई विकट परिस्थितियों में बचाव कैसे करना है।

बहादुरगढ़ की एचएनजी फैक्ट्री में सिविल डिफेंस मॉक ड्रिल का किया आयोजन

बहादुरगढ़। आपातकालीन परिस्थितियों से निपटने के उद्देश्य से शनिवार को एचएनजी फैक्ट्री में सिविल डिफेंस मॉक ड्रिल का आयोजन किया गया। ऑपरेशन शील्ड अभ्यास के तहत ड्रोन अटैक की प्रतीकात्मक स्थिति बनाई गई, जिससे औद्योगिक क्षेत्र में किसी आकस्मिक हमले के दौरान राहत व बचाव कार्यों की दक्षता की जांच की जा सके।

अभ्यास के दौरान फैक्ट्री परिसर में ड्रोन द्वारा विस्फोट की स्थिति दर्शाई गई, जिसमें तुरंत सायरन बजाकर आपात स्थिति घोषित की गई। इसके बाद प्रशासन, फायर ब्रिगेड, स्वास्थ्य विभाग, पुलिस, सिविल डिफेंस की टीमें सक्रिय हो गईं और रेस्क्यू ऑपरेशन प्रारंभ किया गया। इस दौरान एचएनजी यूनिट हेड एसआर बंसल, जीएम एसपी शर्मा, ट्रैफिक एसएचओ विकास कुमार, एसआई अनिल हुड्डा सहित विभिन्न विभागों के अधिकारी मौजूद रहे।

बहादुरगढ़। मॉक ड्रिल के तहत बचाव कार्य में जुटी टीम।

सिविल डिफेंस वॉलंटियर्स ने घायलों को बाहर निकाला

सिविल डिफेंस वॉलंटियर्स ने घायलों की पहचान कर उन्हें सुरक्षित स्थान पर पहुंचाने का अभ्यास किया। दमकल विभाग की टीमों ने आग पर काबू पाने का मॉक प्रदर्शन किया। वहीं स्वास्थ्य विभाग की एंबुलेंस व मेडिकल स्टाफ ने घायलों को प्राथमिक चिकित्सा दी और उन्हें नजदीकी अस्पताल भेजने की प्रक्रिया को दर्शाया। अभ्यास के दौरान विभिन्न विभागों के बीच समन्वय, तत्काल प्रतिक्रिया समय और संचार व्यवस्था की मजबूती की वास्तविक समय में जांच की गई।अभ्यास के बाद एसडीएम नसीब कुमार ने कहा कि ड्रोन जैसे स्थिति औद्योगिक सुरक्षा एक चुनौती होती है। ऐसे में मॉक ड्रिल्स के माध्यम से सतर्कता और क्षमता का परीक्षण समय-समय पर किया जाता है। उन्होंने कहा कि सिविल डिफेंस वॉलंटियर्स की सक्रिय भूमिका रही जो सराहनीय है। इस दौरान औद्योगिक सुरक्षा से जुड़े विभिन्न पहलूओं को परखा गया।

महिला पर फायरिंग करने के आरोपी गिरफ्तार, गाड़ी और हथियार बरामद

बहादुरगढ़। गांव आसौदा टोडराण में महिला पर जान से मारने की नीयत से फायरिंग करने की वारदात पुलिस ने सुलझा ली है। मामले में पुलिस ने दो आरोपी गिरफ्तार किए हैं। आरोपियों से वारदात में प्रयोग किया गया हथियार व गाड़ी बरामद कर ली गई है। दोनों आरोपी पूछताछ के बाद जेल भेज दिए गए हैं। आसौदा थाना प्रभारी अमित कुमार के अनुसार, आसौदा टोडराण की निवासी माया देवी ने शिकायत दी थी कि देवर दिलबाग के परिवार के साथ गांव में ही मौजूद एक प्लाट को

लेकर विवाद चल रहा है। देवर का लड़का अमन कई बार हमारे साथ झगड़ा कर चुका है। शुक्रवार की सुबह करीब चार बजे मैं घर के आंगन में झाडू लगा रही थी। इसी दौरान अमन अपने कुछ साथियों संग गाड़ी में आया। गाड़ी से नीचे उतरकर उसने जान से मारने की नीयत से मेरी तरफ फायर किया। जब मैं बचाव के लिए मकान के अंदर घुसी तो उसने फिर से फायर किए। फिर धमकी दी और कहने लगा कि प्लाट की तरफ देखा तो जान से मार दूंगा। इसके बाद फरार हो गया। इस शिकायत पर पुलिस ने केस दर्ज कर जांच शुरू की। मामले में कार्रवाई करते हुए दो आरोपी पकड़े गए हैं। आरोपियों की पहचान अमन और विकास के रूप में हुई है। दोनों आसौदा के रहने वाले हैं। विकास से गाड़ी तो अमन से अवैध हथियार बरामद हुआ है।

आंधी के बाद बदला मौसम, तापमान में गिरावट

बहादुरगढ़। इलाके में शनिवार की शाम को फिर से मौसम बदल गया। तेज आंधी आने के बाद तापमान में गिरावट आई। देर शाम को ठंडी हवा चली और बरसात की संभावना बनी हुई थी। दरअसल, मई माह में मौसम परिवर्तनशील रहा। कभी भीषण गर्मी पड़ती तो कभी आंधी व बरसात से मौसम बदल जाता। शनिवार की दोपहर को खूब गर्मी महसूस हुई। अधिकतम तापमान 40 डिग्री दर्ज किया गया। लेकिन दोपहर बाद अचानक तेज आंधी आने से मौसम बदल गया। इसके बाद आसमान में बादल छाए रहे और ठंडी हवा चली। तापमान में गिरावट दर्ज की गई।

तीन बजे अचानक बदला मौसम, धूलभरी आंधी

झज्जर। शनिवार को दिनभर सूर्यदेव के तेवर तल्ख रहे। दिनभर चिलचिलाती धूप ने लोगों को खूब परेशान किया। जिसका असर बाजार के कारोबार पर भी पड़ा। दोपहर के समय बाजार सुनसान रहे और सड़कों पर वाहनों की आवाजही भी कम रही। लेकिन दोपहर तीन बजे के बाद एकाएक मौसम का मिजाज बदला और धूलभरी आंधी चलने लगी। गणीमत यह रही कि आंधी ज्यादा देर तक नहीं चली। लेकिन आंधी चलने से तापमान में गिरावट जरूर दर्ज की गई। शनिवार को अधिकतम तापमान 38 डिग्री और न्यूनतम तापमान 28 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया। विशेषज्ञ आगामी दिनों में भी मौसम परिवर्तनशील रहने का अनुमान लगा रहे है।

जसोरखेड़ी से गाड़ी चोरी

बहादुरगढ़। गांव जसोरखेड़ी के खेतों के पास से एक गाड़ी चोरी हो गई। वाहन मालिक ने पुलिस को शिकायत दे दी है। दिल्ली के निवासी सचिन का कहना है कि कबाड़ का सामान ढोने के लिए मेरे पास कई गाड़ियां हैं। एक कैंटर को दिल्ली का निवासी मनोज चलाता है। वह 30 मई को कबाड़ी का सामान भरकर जसोरखेड़ी में बीए भट्ठे के पास खाली खेत में जलाने के लिए 11 बजे पहुंचा था। गाड़ी खाली करके उसने खेत के पास खड़ी कर दी। जब कुछ देर बाद वापस आया तो गाड़ी नहीं मिली। हमने अपने स्तर पर तलाश की लेकिन कुछ पता नहीं चला। कोई अज्ञात शख्स चुरा ले गया है। इस शिकायत पर आसौदा थाना पुलिस ने केस दर्ज कर जांच शुरू कर दी है।

अगवा कर युवक को बेरहमी से पीटा

बहादुरगढ़। शहर के निवासी एक युवक का अपहरण कर बेरहमी से मारपीट किए जाने का मामला सामने आया है। मारपीट में युवक को काफी चोट आई है। उसकी

शिकायत पर पुलिस ने केस दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। वारदात भगत सिंह कॉलोनी के निवासी साहिल के साथ हुई है। साहिल का कहना है कि वह कई साल से खरखोदा के गांव गढ़ी सिसाना में काम करता था। बदले में उसे मेहनताना नहीं मिलता था। इसलिए वह बहादुरगढ़ में अपनी मां के पास आ गया। इस वजह से वे लोग परेशान करने लगे, जिनके पास मैं काम करता था। उन्होंने घर से उठाने की धमकी दी तो मैंने नजरंदाज कर दी। इसी बीच वे लोग यहां बहादुरगढ़ में आए और मुझे जबरन गाड़ी में डालकर ले गए। पूरे रास्ते मारपीट की और फिर वहां अपने ठिकाने पर ले जाकर बेरहमी से पीटा। जैसे तैसे मैंने वहां से निकलकर पुलिस को सूचना दी। खरखोदा पुलिस मुझे बहादुरगढ़ ले आई। इसके बाद इलाज शुरू हुआ। इस मामले में रिंकू, अमन, अजय व रोहित आदि के नाम सामने आए हैं। एसीपी क्राइम प्रदीप कुमार का कहना है कि शिकायत के आधार पर केस दर्ज कर जांच शुरू कर दी गई है।

15 वाहन चालकों के ड्रिंक एंड ड्राइविंग के चालान

झज्जर। यातायात पुलिस द्वारा शुक्रवार देर रात से शनिवार सुबह तक विशेष चैकिंग अभियान चलाकर नशा करके वाहन चलाने वाले चालकों के चालान किए गए। जिला पुलिस आयुक्त डॉक्टर राजश्री सिंह ने बताया कि अभियान के दौरान 115 वाहन चालकों को चैक किया गया। जिसमें से ड्रिंक एंड ड्राइव करते हुए 15 वाहन चालकों के चालान किए गए। इस अभियान का मुख्य उद्देश्य वाहन चालकों को परेशान करना नहीं बल्कि सेफ ड्राइविंग करने के उद्देश्य से यह अभियान चलाया गया ताकि सड़क दुर्घटनाओं में कमी लाई जा सके। उन्होंने कहा कि सड़क दुर्घटनाएं हमारी थोड़ी सी लापरवाही के कारण होती है। इसलिए वाहन चलाते समय नशे का प्रयोग तो बिल्कुल भी न करें हमेशा ध्यान रखें की परिवार घर पर आपका इंतजार कर रहा है।

झज्जर। विशेष अभियान के दौरान चालक की जांच करते हुए पुलिसकर्मी।

पुलिस जांच में पैसे के लेनदेन व नशीले पदार्थ की वजह से हत्या की बात सामने आई, परिजनों ने पुलिस की थ्योरी को नकारा

यंशु के हत्यारोपी से हथियार बरामद पुलिस कार्रवाई से परिजन असंतुष्ट

हरिभूमि न्यूज ⏭ बहादुरगढ़

- यंशु के परिजनों ने शनिवार को थाने के बाहर खड़े होकर अंसतोष जताया

यंशु हत्याकांड में पुलिस दो आरोपियों को गिरफ्तार कर जेल भेज चुकी है। पैसे के लेनदेन तथा नशीले पदार्थ की वजह से हत्या करने की बात सामने आई है। लेकिन पुलिस की थ्योरी और अब तक की कार्रवाई से परिजन संतुष्ट नहीं है। शनिवार को भी परिजनों ने थाने में पहुंचकर अंसतुष्टता जाहिर की और निष्पक्षता पूर्ण गंभीरता से जांच करते हुए सच्चाई सामने लाने की मांग उठाई। दरअसल, मंगलवार की रात को धर्मपुरा का निवासी 19 वर्षीय यंशु दूध लेने के लिए घर से निकला था लेकिन वापस नहीं आया। इसके बाद बुधवार की सुबह शहीद भगत सिंह पार्क में यंशु का शव मिला। तेजधार हथियार से गला रेतकर उसकी हत्या की गई थी। मामले में कार्रवाई करते हुए पुलिस ने दो आरोपी सागर निवासी नूना माजरा और राजेश निवासी बिहार को गिरफ्तार किया। राजेश को पहले ही जेल भेज दिया गया था। जबकि रिमांड पर लिए गए सागर की निशानदेही पर पुलिस ने वारदात में इस्तेमाल किया गया चाकूनुमा ब्लेड व बाइक आदि बरामद की। रिमांड अवधि समाप्त होने के बाद सागर शनिवार को जेल भेज दिया गया। इस केस में अब तक हुई कार्रवाई से परिजन संतुष्ट नहीं है। शनिवार को थाने के बाहर खड़े होकर उन्होंने अंसतोष जताया। हत्या के पीछे पुलिस द्वारा बताई गई थ्योरी उनके गले से नहीं उतर पा रही। परिजनों का कहना है कि केवल एक शख्स द्वारा हत्या करना मुश्किल है। मामले में और भी लोग शामिल हो सकते हैं। केस की गंभीरता से जांच करने की जरूरत है।

बहादुरगढ़। सिटी थाने के बाहर खड़े यंशु के परिजन।

परिजनों बोले-मामले की सीबीआई जांच होनी चाहिए

मामले की सीबीआई से जांच होनी चाहिए। यदि स्थानीय पुलिस से न्याय नहीं मिला तो वे उच्चाधिकारियों का दरवाजा न्याय के लिए खटखटाएंगे। उधर, पुलिस अधिकारियों का कहना है कि मामले में दो आरोपी गिरफ्तार कर जेल भेज दिए हैं। हत्या की वजह भी परिजनों को बताई जा चुकी है।

योगेश कथूनिया ने यूएसए में जीता गोल्ड

हरिभूमि न्यूज ⏭ बहादुरगढ़

अंतरराष्ट्रीय स्तर पर देश का परचम लहरा चुके बहादुरगढ़ के निवासी योगेश कथूनिया ने एक और उपलब्धि हासिल की है। योगेश ने यूएसए के एरिजोना में आयोजित डेसर्ट चैलेंज गेम्स 2025 में गोल्ड मेडल जीता है। गोल्ड के लिए योगेश ने 44.00 मीटर दूर चक्का फेंका। कथूनिया की जीत पर उसके परिजनों और खेल प्रेमियों ने खुशी जताई है। साथ ही आगामी प्रतियोगिताओं के लिए भी शुभकामनाएं दी हैं। बता दें कि योगेश बहादुरगढ़ में बराही रोड के निवासी हैं। टोक्यो और पेरिस पैरालंपिक गेम्स में देश के लिए मेडल जीत चुके हैं। वर्ल्ड चैंपियनशिप में तीन और एशियन चैंपियनशिप में एक मेडल योगेश के नाम है।

उपलब्धि

- यूएसए के एरिजोना में आयोजित डेसर्ट चैलेंज गेम्स में गोल्ड जीता
- गोल्ड के लिए योगेश ने 44.00 मीटर दूर चक्का फेंका
- टोक्यो और पेरिस पैरालंपिक गेम्स में देश के लिए मेडल जीत चुके

म्यूचुअल फंड व हेज फंड, दोनों निवेश के विकल्प

- दोनों के उद्देश्यों और रणनीतियां काफी अलग-अलग
- म्यूचुअल फंड सुरक्षित और आम लोगों के लिए सही
- हेज फंड जोखिम भरा, लेकिन हाई रिटर्न वाला विकल्प

हेज फंड उन लोगों के लिए होता है जो थोड़े ज्यादा जोखिम लेकर ज्यादा मुनाफा कमाना चाहते हैं। अगर आप भी ये जानना चाहते हैं कि म्यूचुअल फंड और हेज फंड में क्या फर्क है और आपके लिए कौन सा बेहतर रहेगा, तो आइए इस रिपोर्ट में हम आपको दोनों के बारे में बताते हैं।

निवेश मंत्रा
बिजनेस डेस्क

म्यूचुअल फंड और हेज फंड-दोनों निवेश के तरीके हैं, लेकिन अलग-अलग सोच और जोखिम के साथ आते हैं। म्यूचुअल फंड को सुरक्षित निवेश के तरीकों में और आम लोगों के लिए जाना जाता है, जबकि हेज फंड जोखिम भरा है, लेकिन यह हाई रिटर्न वाला ऑप्शन बताया जा रहा है। इसलिए इनके बीच में काफी गहरा फर्क है। जब बात निवेश की आती है, तो म्यूचुअल फंड और हेज फंड जैसे शब्द अक्सर सुनने को मिलते हैं, लेकिन क्या आप जानते हैं कि ये दोनों निवेश के तरीके हैं, लेकिन बिलकुल अलग अंदाज में काम करते हैं? म्यूचुअल फंड आम निवेशकों के लिए होता है, जो अपने पैसे को सुरक्षित और समझदारी से बढ़ाना चाहते हैं। वहीं हेज फंड उन लोगों के लिए होता है जो थोड़े ज्यादा जोखिम लेकर ज्यादा मुनाफा कमाना चाहते हैं। अगर आप भी ये जानना चाहते हैं कि म्यूचुअल फंड और हेज फंड में क्या फर्क है और आपके लिए कौन सा बेहतर रहेगा, तो आइए इस रिपोर्ट में हम आपको दोनों के बारे में बताते हैं।

होता क्या है म्यूचुअल फंड

म्यूचुअल फंड एक तरह का निवेश का ऑप्शन होता है, जिसमें एक प्रोफेशनल फंड मैनेजर कई निवेशकों से इकट्ठा किए हुए पैसे को है और उसे बॉन्ड, स्टॉक्स और अन्य सिक्योरिटीज जैसे विविध प्रकार की संपत्तियों में निवेश करता है। म्यूचुअल फंड का उद्देश्य इंडिविजुअल इन्वेस्टर्स को ऐसे डायवर्सिफाइड और प्रोफेशनल तरीके से मैनेज पोर्टफोलियो तक पहुंच प्रोवाइड करना होता है, जिन्हें वे अकेले नहीं खरीद पाते हैं। म्यूचुअल फंड खासकर शुरुआती निवेशकों या उन लोगों के लिए उपयुक्त होते हैं जो निवेश में ज्यादा शामिल होना नहीं चाहते। यदि आपकी निवेश अवधि लंबी है और जोखिम लेने की क्षमता कम है, तो म्यूचुअल फंड आपके लिए फाइनेंशियल मार्केट में शामिल होने का आसान तरीका है, भले ही आपको इस सेक्टर में ज्यादा जानकारी न हो।

क्या होता है हेज फंड

हेज फंड एक तरह का खास इन्वेस्टमेंट ऑप्शन होता है, जिसमें केवल अमीर और अनुभवी निवेशक पैसा लगाते हैं। यह फंड अलग-अलग और थोड़ी कॉम्प्लेक्स स्ट्रेटजी से ज्यादा फायदा कमाने की कोशिश करता है। हेज फंड वाले ज्यादा जोखिम उठाते हैं और वे उधार लेकर या मार्केट में शॉर्ट सेलिंग जैसी तरकीबों का इस्तेमाल करते हैं, ताकि ज्यादा मुनाफा कमाया जा सके। ये फंड ज्यादा नियमों से बंधे नहीं होते और इसलिए इनके काम करने का तरीका म्यूचुअल फंड से अलग होता है। हेज फंड उन लोगों के लिए है जो बड़ा पैसा लगाना चाहते हैं और जोखिम लेने को तैयार हैं।

म्यूचुअल फंड्स और हेज फंड्स में अंतर

- **ऑब्जेक्टिव :** म्यूचुअल फंड्स का मकसद निवेशकों को सुरक्षित और लगातार रिटर्न देना होता है। इसके लिए वे पैसा कई कंपनियों में लगाते हैं। हेज फंड्स का मकसद ज्यादा मुनाफा कमाना होता है, भले ही इसके लिए जोखिम उठाना पड़े।
- **इनवेस्टर बेस :** म्यूचुअल फंड्स में कोई भी आम व्यक्ति निवेश कर सकता है। हेज फंड्स में सिर्फ ज्यादा पैसा वाले या अनुभवी निवेशक ही पैसा लगा सकते हैं।
- **मैनेजमेंट :** म्यूचुअल फंड्स को नियमों के अनुसार प्रोफेशनल लोग संभालते हैं। हेज फंड्स को ज्यादा आजादी होती है और इन्हें कम निगरानी में चलाया जाता है।
- **इनवेस्टमेंट स्ट्रैटेजी :** म्यूचुअल फंड्स में पैसा सुरक्षित और अलग-अलग जगहों पर लगाया जाता है। हेज फंड्स जोखिम लेकर जटिल और आक्रामक तरीके अपनाते हैं।
- **लिक्विडिटी :** म्यूचुअल फंड्स से आप किसी भी दिन पैसा निकाल सकते हैं। हेज फंड्स में अक्सर लॉक-इन पीरियड होता है, यानी कुछ समय तक पैसा नहीं निकाल सकते।
- **फीस :** म्यूचुअल फंड्स में फीस कम होती है और पहले से तय होती है। हेज फंड्स में फीस ज्यादा होती है और मुनाफे पर बेस्ड भी हो सकती है।
- **रेग्युलेशन :** म्यूचुअल फंड्स पर सख्त सरकारी नियम लागू होते हैं और ट्रांसपेरेंसी बनी रहती है। हेज फंड्स पर कम नियम होते हैं और जानकारी कम मिलती है।
- **निवेश रणनीति :** म्यूचुअल फंड आमतौर पर अधिक पारंपरिक निवेश रणनीतियों का उपयोग करते हैं, जबकि हेज फंड अधिक आक्रामक और उच्च जोखिम वाले रणनीतियों का उपयोग करते हैं।
- **जोखिम स्तर :** म्यूचुअल फंड आमतौर पर कम जोखिम वाले होते हैं, जबकि हेज फंड उच्च जोखिम वाले हो सकते हैं।
- **निवेशक योग्यता :** म्यूचुअल फंड अधिक निवेशकों के लिए उपलब्ध होते हैं, जबकि हेज फंड अक्सर उच्च नेटवर्थ वाले निवेशकों के लिए आरक्षित होते हैं।
- **अंततः,** म्यूचुअल फंड और हेज फंड दोनों में निवेश करने से पहले अपने निवेश लक्ष्यों, जोखिम सहनशीलता, और वित्तीय स्थिति का मूल्यांकन करना महत्वपूर्ण है।

एसआईपी में ज्यादा रिटर्न चाहिए तो पांच चीजों पर कर लें फोकस

- एसआईपी पोर्टफोलियो की नियमित समीक्षा करना बेहद जरूरी
- आप कभी निवेश करके 'भूल जाने' की आदत न डालें
- अपनी ज़रूरत के हिसाब से पोर्टफोलियो में बदलाव करते रहे

जानकारी
बिजनेस डेस्क

अगर आप भी एक निवेशक हैं या निवेश करने जा रह रहे हैं तो कुछ बातें अपने पल्ले बांध लें। इससे आप आसानी से अपने पैसे को बढ़ा सकेंगे। कहते हैं तुरंत पैसा बढ़ाने का कोई शॉर्टकट नहीं है, लेकिन धैर्य और संयम के साथ निवेश किया जाए तो आप बेहतर रिटर्न प्राप्त कर मोटा पैसा बना सकते हैं। यदि आप सीधे शेयर बाजार में इन्वेस्ट करने का जोखिम नहीं लेना चाहते, तो म्यूचुअल फंड आपके लिए एक अच्छा विकल्प हो सकता है। यहां आपका जोखिम कुछ हद तक कम हो जाता है। अगर आप एकमुश्त बड़ी रकम निवेश करने में सक्षम नहीं हैं, तो सिस्टेमैटिक इन्वेस्टमेंट प्लान (एसआईपी) के जरिए म्यूचुअल फंड में निवेश कर सकते हैं। एसआईपी में आप हर महीने एक छोटी रकम निवेश कर सकते हैं। आज हम आपको 5 ऐसी बातें बताने जा रहे हैं, जिनका ध्यान रखकर आप एसआईपी के जरिए म्यूचुअल फंड से अच्छा रिटर्न कमा सकते हैं।

निवेश में देरी न करें

एसआईपी का एक सबसे बड़ा फायदा कंपाउंडिंग (चक्रवृद्धि ब्याज) की पावर है। आप जितनी जल्दी निवेश करना शुरू करेंगे, उतना ही बड़ा फंड बना पाएंगे। इससे आप छोटे निवेश से भी समय के साथ बड़ी पूंजी जमा कर सकते हैं। देरी से शुरुआत करने का मतलब है कंपाउंडिंग का पूरा फायदा न ले पाना। इसलिए समय रहते निवेश की प्लानिंग करें। जितना जल्दी हो सके निवेश की प्लानिंग करें और उसे बढ़ाते जाएं। इससे आप आसानी से अपना पैसा बढ़ा पाएंगे।

हमेशा अनुशासित रहें

अक्सर बाजार में उतार-चढ़ाव आते रहते हैं, जो निवेशकों को परेशान करने वाले हो सकते हैं, लेकिन एसआईपी में सफलता की कुंजी अनुशासित रहना है। बाज़ार में गिरावट के दौरान भी अपने निवेश को जारी रखने से आप कम कीमतों पर अधिक यूनिट खरीद सकते हैं, जिससे समय के साथ आपकी खरीद लागत का औसत निकल जाता है (इसे रुपया लागत औसत भी कहते हैं)। घबराकर निवेश बंद न करें। बाजार में उतार-चढ़ाव से परेशान न हों, बल्कि जब बाजार में गिरावट आए तो अपने निवेश को और बढ़ाने का प्रयास करें। उससे भागने का प्रयास न करें। एसआईपी के जरिये निवेश आपके लिए काफी लाभकारी साबित हो सकता है।

धीरे-धीरे एसआईपी की रकम बढ़ाएं (स्टेप-अप एसआईपी)

जैसे-जैसे आपकी आय बढ़े, अपनी एसआईपी की रकम बढ़ाने पर विचार करें। यह स्टेप-अप दृष्टिकोण आपको म्यूचुअल फंड की पूरी क्षमता का लाभ उठाने में मदद कर सकता है। साथ ही, यह सुनिश्चित करता है कि आपका निवेश महंगाई और आपके बढ़ते वित्तीय लक्ष्यों के साथ तालमेल बनाए रखे। स्टेप-अप एसआईपी एक प्रकार की सिस्टमेटिक इनवेस्टमेंट प्लान (एसआईपी) है जिसमें निवेशक नियमित अंतराल पर निवेश की जाने वाली राशि को बढ़ाने का विकल्प चुन सकते हैं।

स्टेप-अप एसआईपी के फायदे

- **वृद्धि के साथ निवेश :** स्टेप-अप एसआईपी में निवेशक अपनी आय में वृद्धि के साथ निवेश की जाने वाली राशि को बढ़ा सकते हैं।
- **लंबी अवधि के लिए उपयुक्त :** स्टेप-अप एसआईपी लंबी अवधि के लिए उपयुक्त है, क्योंकि इसमें निवेशक अपने निवेश को बढ़ाते हुए लंबी अवधि में अधिक रिटर्न प्राप्त कर सकते हैं।
- **नियमित निवेश :** स्टेप-अप एसआईपी में निवेशक नियमित अंतराल पर निवेश करते हैं, जिससे उन्हें अनुशासन में रहने में मदद मिलती है।

सही फंड का चुनाव करें

देखा जाए तो सभी म्यूचुअल फंड एक जैसे नहीं होते। सबका प्रदर्शन और रिटर्न अलग-अलग होता है। ऐसे में आपको पिछले प्रदर्शन, एक्सपेंस रेश्यो (फंड चलाने का खर्च) और फंड मैनेजर की विशेषज्ञता के आधार पर विभिन्न फंडों पर रिसर्च करनी चाहिए। ऐसे फंड चुनें जो आपके जोखिम लेने की क्षमता और निवेश लक्ष्यों से मेल खाते हों, चाहे वे इक्विटी (शेयर), डेट (ऋण) या हाइब्रिड (दोनों का मिश्रण) फंड हों। इससे आप बिना किसी रिस्क के निवेश कर पाएंगे और बेहतर रिटर्न प्राप्त कर पाएंगे।

अपने पोर्टफोलियो की समीक्षा करें

निवेश करके 'भूल जाने' की आदत न डालें। अपने एसआईपी पोर्टफोलियो की नियमित समीक्षा करना बहुत जरूरी है। इससे आपको अपने पोर्टफोलियो में ज़रूरत के हिसाब से बदलाव करने में मदद मिलेगी। ऐसे फंड्स पर नज़र रखें जो लगातार अपने बेंचमार्क (तुलना के लिए निर्धारित सूचकांक) से बेहतर प्रदर्शन कर रहे हों। यदि आपके मौजूदा निवेश खराब प्रदर्शन कर रहे हैं, तो फंड निकालकर किसी बेहतर विकल्प में निवेश करने पर विचार करें। अ

शेयर मार्केट में उतार-चढ़ाव के टेंशन से बचना है तो बॉन्ड में निवेश फायदेमंद

- निवेश का एक सरल नियम यह है कि अपनी उम्र को 100 में से घटाएं
- इसमें जो संख्या बचे, उतना प्रतिशत इक्विटी में और बाकी बॉन्ड में निवेश करें
- बॉन्ड निवेशकों को एक सुनिश्चित और नियमित रिटर्न दे रहे हैं

तैयारी
बिजनेस डेस्क

अगर आप भी शेयर बाजार की उतार-चढ़ाव से परेशान रहते हैं, तो बॉन्ड एक बेहतर और स्थिर निवेश विकल्प साबित हो सकता है। विशेषज्ञों का मानना है कि मौजूदा वैश्विक अनिश्चितताओं, महंगाई और अमेरिकी ब्याज दरों को लेकर बढ़ती चिंताओं के बीच बॉन्ड निवेशकों को एक सुनिश्चित और नियमित रिटर्न दे रहे हैं। यही वजह है कि बॉन्ड निवेश खासकर उन लोगों के लिए आकर्षक बनता जा रहा है जो जोखिम से बचना चाहते हैं और स्थिर आय की तलाश में हैं। पिछले तीन महीनों में निफ्टी 50 में 5.4% की गिरावट आई है, जबकि सरकारी और कॉरपोरेट बॉन्ड स्थिर रिटर्न दे रहे हैं।" सरकारी बॉन्ड फिलहाल सालाना 6.2% से 6.8% का रिटर्न दे रहे हैं, जबकि उच्च रेटिंग (एएए) वाले कॉरपोरेट बॉन्ड 6.8% से 7.5% का सालाना रिटर्न दे रहे हैं। दीर्घकालिक निवेशकों के लिए, खासकर वे जो जोखिम से बचना चाहते हैं, बॉन्ड एक सुरक्षात्मक निवेश के तौर पर काम करते हैं। साथ ही, निवेश पोर्टफोलियो में विविधता लाने के लिए भी यह एक अहम साधन है, जिससे बाजार की अस्थिरता करीब 30% तक कम की जा सकती है।

बॉन्ड रिटर्न में भरोसा बढ़ रहा

इंडिया बॉन्ड्स के सह-संस्थापक विशाल गोयनका के मुताबिक, जब बाजार भू-राजनीतिक तनावों, केंद्रीय बैंक की नीतियों और वैश्विक घटनाओं से प्रभावित हो रहा हो, उस वक्त बॉन्ड निवेश एक स्थिर नकदी प्रवाह और पूंजी संरक्षण प्रदान करता है। इसलिए बॉन्ड निवेशकों के लिए भरोसे का सौदा है। इसमें भले रिटर्न दूसरे विकल्पों से कुछ कम हो, लेकिन कभी भी नुकसान नहीं पहुंचाता। इसलिए भी बॉन्ड में निवेशकों का भरोसा लगातार बढ़ा जा रहा है खाकर उन लोगों में जो जोखिम से बचना चाहते हैं और सुनिश्चित और नियमित रिटर्न चाहते हैं। इसलिए आप भी सुरक्षित निवेश करना चहते हैं तो बॉन्ड आपके लिए बेहतर विकल्प हो सकते हैं।

आंकड़ों पर एक नजर

2020-2025 के दौरान निफ्टी 50 का कुल रिटर्न 19.8% रहा, लेकिन उतार-चढ़ाव अधिक था। वहीं, सोना ने इसी अवधि में 16.32% का सालाना रिटर्न दिया। 10 साल के सरकारी बॉन्ड का औसत रिटर्न 6.19% और एएए कॉरपोरेट बॉन्ड्स का सालाना औसत रिटर्न 6.9% रहा। 2024-25 में, निफ्टी ने सिर्फ 7.44% रिटर्न दिया, जबकि सोने ने 41.5% और एएए रेटेड कॉरपोरेट बॉन्ड्स ने 8.03% का स्थिर रिटर्न दिया।

जागरूकता की कमी

आज भी बॉन्ड, खासकर युवाओं के बीच, उतने लोकप्रिय नहीं हैं। इसका कारण है अपेक्षाकृत कम रिटर्न, कम प्रचार, और वित्तीय ऐप्स व मीडिया में कम उपस्थिति। युवाओं में ज्यादा रिटर्न की चाहत उन्हें इक्विटी या म्यूचुअल फंड की ओर खींचती है। हालांकि आरबीआई रिटेल डायरेक्ट और डिजिटल प्लेटफॉर्म्स जैसे इंडिया बॉन्ड्स के माध्यम से अब यह स्थिति बदल रही है।

बॉन्ड बाजार का विकास

भारत में बॉन्ड बाजार तेजी से विकसित हो रहा है। भारत का कुल बॉन्ड बाजार अब $2.69 ट्रिलियन तक पहुंच चुका है। हालांकि अमेरिका जैसे विकसित बाजारों की तुलना में अभी भी तरलता और पहुंच में सुधार की जरूरत है, लेकिन सेबी और अन्य संस्थानों के प्रयासों से यह बदलाव तेजी से हो रहा है।

कितना पैसा बॉन्ड में लगाएं

एक सरल नियम यह है कि अपनी उम्र को 100 में से घटाएं और जो संख्या बचे, उतना प्रतिशत इक्विटी में और बाकी प्रतिशत बॉन्ड व निश्चित आय वाले साधनों में निवेश करें। उदाहरण के लिए, यदि आपकी उम्र 40 है, तो 60% आप इक्विटी में और 40% बॉन्ड जैसे स्थिर निवेश में रख सकते हैं।

क्या है बॉन्ड

बॉन्ड एक प्रकार का वित्तीय साधन है जिसमें निवेशक एक निश्चित अवधि के लिए अपने पैसे उधार देते हैं और बदले में नियमित ब्याज और मूलधन की वापसी प्राप्त करते हैं।

बॉन्ड की विशेषताएं

- **निश्चित आय:** बॉन्ड निवेशकों को नियमित ब्याज की आय प्रदान करते हैं।
- **निश्चित अवधि:** बॉन्ड की निश्चित अवधि होती है, जिसके अंत में मूलधन की वापसी होती है।
- **कम जोखिम:** बॉन्ड आमतौर पर कम जोखिम वाले निवेश विकल्प होते हैं।
- **विविधीकरण:** बॉन्ड पोर्टफोलियो में विविधीकरण लाने में मदद कर सकते हैं।

बॉन्ड के प्रकार

- **सरकारी बॉन्ड:** सरकारी बॉन्ड सरकार द्वारा जारी किए जाते हैं और इनमें निवेश करने से सरकार को उधार मिलता है।
- **कॉर्पोरेट बॉन्ड:** कॉर्पोरेट बॉन्ड कंपनियों द्वारा

बचत 5 साल में घर खरीदना चाहते हैं या बच्चों की शिक्षा के लिए कर रहे निवेश, फंड एकत्रित कर करना चाहते हैं अपनी रिटायरमेंट प्लानिंग

ये टिप्स आपकी पूंजी भी बढ़ाएंगे और आपको हाथ नहीं फैलाने देंगे

निवेश के कुछ टिप्स अपनाएं, बना देंगे आपको आत्मनिर्भर
शुरुआत करने से पहले अपने वित्तीय लक्ष्य को स्पष्ट करें

समझदारी
बिजनेस डेस्क

अगर आप भी निवेश करे खुद को आत्मनिर्भर बनाने चाहते हैं या रिटायरमेंट प्लानिंग कर रहे हैं तो निवेश के कुछ अहम टिप्स आपके लिए फायदेमंद साबित हो सकते हैं। बस आपको पहले तय करना है कि आप निवेश क्यों कर रहे हैं यानी इस निवेश के पीछे आपका लक्ष्य क्या है। क्या आप 5 साल में घर खरीदना चाहते हैं,बच्चों की शिक्षा के लिए निवेश कर रहे हैं या फंड एकत्रित कर रिटायरमेंट प्लानिंग करना चाह रहे हैं। जैसे ही आप अपना लक्ष्य तय कर लें तो निवेश के कुछ टिप्स अपनाएं। ये आपकी पूंजी भी बढ़ाएंगे और आपको हाथ नहीं फैलाने देंगे। आज के इस समय में हर कोई आर्थिक रूप से मजबूत बनना चाहता है। अक्सर लोग इंटरनेट पर सवाल पूछते हैं कि अमीर कैसे बने? आप केवल मेहनत से ही नहीं बल्कि स्मार्ट निवेश और वित्तीय अनुशासन में रहकर भी अमीर बन सकते हैं। इस रिपोर्ट में हम आपके लिए निवेश के कुछ ऐसे टिप्स लेकर आए हैं, जिससे जिससे ना केवल आपकी पूंजी बढ़ेगी, बल्कि इससे आप आत्मनिर्भर भी बनेंगे।

सबसे पहले निर्धारित करें लक्ष्य

निवेश की शुरुआत करने से पहले आपको अपने वित्तीय लक्ष्य स्पष्ट होने चाहिए। जैसे कि आप 5 साल में अपना घर खरीदना चाहते हैं, बच्चों की शिक्षा के लिए फंड एकत्रित करना चाहते हैं या फिर रिटायरमेंट प्लानिंग करना चाहते हैं। आपको अपने लक्ष्य के अनुरूप निवेश की शुरुआत करनी चाहिए। आपको अपने छोटे-छोटे वित्तीय गोल और लंबी अवधि के गोल तय करने चाहिए। जैसे 1 से 3 साल के लिए, 3 से 7 साल के लिए और 7 साल से अधिक। इसके बाद ही निवेश करना शुरू करेंगे तो आपके निवेश की चीजें पूरी तरह से स्पष्ट रहेंगी।

बचत को दें प्राथमिकता

यदि आप अमीर बनना चाहते हैं तो अपने वित्तीय गोल बनाने के बाद बचत की शुरुआत करें। इसके लिए हर महीने का बजट बनाएं। अनावश्यक खर्च करने से बचें। बाजार में जाकर चीजों को देखकर ललचाएं नहीं। आपको हर महीने अपनी आय का काम से कम 20 से 30% बचाना है। आप 50 -30-20 नियम के अनुसार बचत कर सकते हैं। इस नियम के अनुसार अपनी आय का 50% हिस्सा जरूरतों पर खर्च करें, 30% को अपनी इच्छाओं और मनोरंजन जैसे शौक के लिए खर्च करें, बचे हुए 20% से बचत करके उसका निवेश करें। हर महीने निवेश हो सके इसके लिए आप अपने खाते से ऑटोमेटिक निवेश की सुविधा को शुरू कर सकते हैं।

पहले निवेश को समझना जरूरी

आजकल निवेश के कई विकल्प मौजूद हैं, जिनमें से आप अपनी आय और जोखिम लेने की क्षमता का आकलन करके फिर निवेश करें। आप चाहे तो म्युचुअल फंड के एसआईपी में निवेश करके लॉन्ग टर्म में बड़ा फंड जोड़ सकते हैं। इसके अलावा डीमैट खाते में भी निवेश किया जा सकता है, रियल एस्टेट, सरकारी योजनाएं, फिक्स्ड डिपॉजिट आदि विकल्प में निवेश किया जा सकता है।

अपने निवेश को करें डायवर्सिफाई

निवेश के लिए अक्सर विशेषज्ञ भी यह सलाह देते हैं कि निवेश कभी भी एक जगह नहीं किया जाना चाहिए। अपने पैसे को अलग-अलग एसेट क्लास जैसे इक्विटी, डेट, गोल्ड और रियल स्टेट में बांटे। ताकि किसी एक में भी अगर आपको नुकसान हो तो दूसरे विकल्प से उसे समायोजित किया जा सके और आपका निवेश लाभ दे सकें और आपके गोल को पूरा कर सके।

लॉन्ग टर्म निवेश को दें प्राथमिकता

यदि आप अपने निवेश पर बड़ा रिटर्न हासिल करना चाहते हैं तो इसके लिए जरूरी है कि लॉन्ग टर्म के लिए निवेश करें। क्योंकि लॉन्ग टर्म में चक्रवृद्धि ब्याज का ज्यादा लाभ मिलेगा। आप जितनी जल्दी निवेश की शुरुआत करेंगे उतना ज्यादा आपको लाभ मिलेगा। लॉन्ग टर्म में चक्रवृद्धि ब्याज पैसा बढ़ाने का सबसे बढ़िया तरीका है।

वित्तीय शिक्षा बढ़ाएं

यदि आप चाहते हैं कि आप निवेश की दुनिया में सफल हो पाए तो उसके लिए लगातार सीखते रहें। वित्तीय किताबें, वित्तीय ब्लॉग पढ़ने के साथ ही विशेषज्ञ से भी सलाह ले सकते हैं। रोजाना अखबार भी पढ़ें और न्यूज सुनें। अपने निवेश की समीक्षा भी करते रहें।

इमरजेंसी फंड को ना करे नजरअंदाज

आपके निवेश के साथ-साथ टैक्स बचत और इमरजेंसी फंड बनाने पर भी फोकस करना चाहिए। आपके पास काम से कम 6 से 12 महीने के खर्च के बराबर का इमरजेंसी फंड होना चाहिए। इससे आप आपात स्थिति से निपट सकते हैं।

अनुशासित रहें और धैर्य रखें

यदि आप वित्तीय स्वतंत्रता हासिल करना चाहते हैं बड़ा गोल हासिल करना चाहते हैं तो इसके लिए जरूरी है कि निवेश के प्रति अनुशासित और धैर्यवान रहें। अपने निवेश को हर साल बढ़ाते जाएं। इससे आप कम समय में ही अपना पैसा बढ़ाकर आत्मनिर्भर बन सकते हैं।

अपने और परिवार के लिए खरीदे इंश्योरेंस

भारत में आज भी कई लोगों के पास मेडिकल इंश्योरेंस नहीं है, जिसके कारण मेडिकल इमरजेंसी की स्थिति में कई लोगों का पूरा बैंक अकाउंट और निवेश खाली हो जाता है। यहां तक की कई बार कर्ज लेने की भी नौबत आ जाती है। ऐसी स्थिति से बचने के लिए अपने और अपने परिवार के लिए मेडिकल इंश्योरेंस जरूर लें।

एमआर स्कूल हसनपुर में अभिभावक-शिक्षक सम्मेलन का आयोजन

अभिभावकों ने ली बच्चों की प्रोग्रेस रिपोर्ट

■ शानदार परिणाम के लिए सभी अभिभावकों को बधाई दी

हरिभूमि न्यूज ▶▶| झज्जर

एम आर स्कूल हसनपुर में अभिभावक-शिक्षक सम्मेलन का आयोजन किया गया। सम्मेलन में कक्षा नर्सरी से चौथी कक्षा के बच्चों के अभिभावकों ने उनके पीरियोडिकल टेस्ट-1 की प्रोग्रेस रिपोर्ट को जानने के लिए भाग लिया। शिक्षकों ने अभिभावकों को बच्चों के प्रदर्शन की जानकारी दी और बच्चों की प्रोग्रेस रिपोर्ट साझा की। कई बच्चों के परिणाम काफी अच्छे आए, जिन बच्चों के परिणाम औसत रहें उनके अभिभावकों के साथ शिक्षिकाओं ने उनके अच्छे रिजल्ट लाने पर बातचीत की। इस मौके पर विद्यालय ने कई प्रतियोगिताओं के परिणामों की घोषणा की और उनके सर्टिफिकेट भी उपहारों के साथ बच्चों को दिए। प्राचार्य आदर्श मिश्रा ने इस शानदार परिणाम के लिए सभी अभिभावकों को बधाई देते हुए उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की।

झज्जर। कार्यक्रम के दौरान उपस्थित स्कूल स्टॉफ सदस्य, पीटीएम के दौरान उपस्थित अभिभावक एवं स्कूल स्टॉफ सदस्य। फोटो :हरिभूमि

पीटीएम के बाद पुस्तक मेले का उठाया लाभ

झज्जर। आरईडी विद्यालय में पीटीएम का सफल आयोजन किया गया। अभिभावकों को उनके बच्चों की मासिक परीक्षा के परिणाम और प्रगति रिपोर्ट कार्ड सौंपे गए। शिक्षक अभिभावक आपस में बैठकर बच्चों की पढ़ाई, व्यवहार और आगे की रणनीति पर विस्तार से चर्चा करते नजर आए। यह संवाद बच्चों के समग्र विकास के लिए एक मजबूत कदम रहा। मीटिंग के दौरान अभिभावकों ने स्कूल में लगे पुस्तक मेले का भी लाभ उठाया। कई अभिभावकों ने बच्चों के लिए रुचिकर और ज्ञानवर्धक किताबें खरीदीं, जिससे यह अनुभव और भी खास बन गया। इसके साथ ही जुलाई महीने में होने वाली आगामी गतिविधियों की जानकारी भी दी गई।

बिछड़े हुए बच्चों को अपनों से मिला रही पुलिस

बहादुरगढ़। मौजूदा दौर में गुमशुदगी के मामले तेजी से बढ़ रहे हैं। इनमें ज्यादातर मामले बच्चों और किशोरों हैं, जो छोटी छोटी बातों पर अपने अभिभावकों से रूठ कर घर से निकल जाते हैं। बहादुरगढ़ में इस तरह के कई मामले सामने आए है। ऐसे मामलों में पुलिस का भी सकारात्मक रुख देखने को मिला है। पुलिस द्वारा ऐसे कई बच्चे तुरंत ढूंढकर उनके अभिभावकों के हवाले किए गए हैं। बीती रात को भी यहां ऐसी हुई घटना हुई। दरअसल, सिटी थाने में तैनात एएसआई सोमबीर रात को गश्त पर थे। इस दौरान उन्हें एक बालक मिला। वह अपने परिवार से रूठ कर निकला हुआ था। काफी पूछताछ के बाद भी शुरुआत में उसने परिवार के बारे में कुछ नहीं बताया। फिर सोमबीर ने दोस्ताना व्यवहार करते हुए उसके दिमाग को पढ़ा और काउंसलिंग कराई। उसे खाना खिला और जरूरत की चीजें दिलाई। फिर बालक से उसके माता, पिता की जानकारी प्राप्त हुई। इसके बाद उसे माता, पिता को सौंप दिया गया। बच्चा पाकर अभिभावकों ने भी राहत की सांस ली। सहायक उप निरीक्षक सोमबीर कुमार ने आम लोगों से अपील करते हुए कहा कि आप अपने बच्चों के साथ मैत्रीपूर्ण व्यवहार करें।

न्यूज डायरी

बहादुरगढ़। स्कूल निदेशिका व शिक्षकों के साथ विजेता छात्रा दिव्यांशी।

पदक विजेता छात्रा का अभिनंदन

बहादुरगढ़। दिल्ली त्यागराज स्टेडियम में अंडर-17 थांग टा नेशनल स्कूल गेम का आयोजन किया गया। यह खेल मणिपुर राज्य का पारंपरिक मार्शल आर्ट है। इसे तलवार और भाले की कला भी कहा जाता है। इस खेल में अपनी प्रतिभा दिखाते हुए हरदयाल पब्लिक स्कूल की कक्षा 11वीं की छात्रा दिव्यांशी मलिक ने नेशनल लेवल पर सिल्वर मेडल प्राप्त कर अपने माता-पिता और विद्यालय का नाम रोशन किया। विजेता दिव्यांशी का स्कूल में अभिनंदन किया गया। निदेशिका अनुराधा यादव ने दिव्यांशी को बधाई दी तथा उसके भविष्य के प्रयासों में निरंतर सफलता की कामना की।

जिलास्तरीय तैराकी प्रतियोगिता आज

बहादुरगढ़। झज्जर जिला तैराकी प्रतियोगिता रविवार को एचएल सिटी स्थित चैंपियंस एक्वेटिक एकेडमी के स्वीमिंग पूल पर आयोजित की जाएगी। जिला तैराकी संघ प्रधान विजय गहलावत (एसीपी) और सचिव सुनील काद्यान ने बताया कि हरियाणा तैराकी संघ के दिशानिर्देशों के तहत प्रतियोगिता का आयोजन किया जा रहा है। प्रतियोगिता में भाग लेने वाले तैराक का हरियाणा तैराकी संघ के पास वैलिड रजिस्ट्रेशन जरूरी है। बिना वैलिड रजिस्ट्रेशन के कोई भी तैराक प्रतियोगिता में भाग नहीं ले सकेगा। उन्होंने बताया कि हरियाणा ओलंपिक संघ के उपाध्यक्ष, भारतीय तैराकी संघ के उपाध्यक्ष अनिल खत्री भी प्रतियोगिता के दौरान मुख्यअतिथि के तौर पर मौजूद रहेंगे। प्रतियोगिता सुबह 8 बजे शुरू होगी। प्रतियोगिता में प्रत्येक तैराक पांच इवेंट्स में भाग ले सकता है। विजेता तैराक राज्य तैराकी प्रतियोगिता में भाग ले पाएंगे। सीनियर, जूनियर और सब जूनियर ग्रुप्स में प्रतियोगिता होगी। पहली बार सब जूनियर ग्रुप में ग्रुप छह को जोड़ा गया है। जिसमें छह साल या उससे कम उम्र के तैराक भाग ले पाएंगे। इस दौरान तैराकी कोच साई जाधव, पदमपाल, संदीप, प्रवीन और अमित भी मौजूद रहेंगे।

विद्यार्थियों को यातायात नियमों के प्रति जागरूक किया

बहादुरगढ़। विद्यार्थियों को जागरूक करते एसआई सत्यप्रकाश। फोटो :हरिभूमि

बहादुरगढ़। गांव नूना माजरा के राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय में कानूनी जागरूकता प्रकोष्ठ के अंतर्गत सेमिनार का आयोजन किया गया। इसमें विद्याथियों को सड़क सुरक्षा व यातायात नियमों के बारे में जागरूक किया गया। स्कूली लीगल लिटरेसी क्लब की संयोजिका अनिता दहिया के मुताबिक, प्रिंसिपल डॉ. कैलाश देवी की अध्यक्षता में आयोजित सेमिनार में यातायात समन्वयक उप निरीक्षक सत्य प्रकाश ने मुख्य वक्ता व सत्येंद्र दहिया ने विशिष्ट अतिथि के तौर पर शिरकत की। विद्यार्थियों ने यातायात नियमों की पालना के संबंध में सीट बेल्ट लगाने के लिए ड्राइंग कंपीटिशन का आयोजन भी किया। इस दौरान वक्ताओं ने बच्चों को यातायात नियम और सड़क सुरक्षा के नियमों की जानकारी देते हुए उनका पालन करने को प्रेरित किया। प्रिंसिपल कैलाश देवी ने भी बच्चों को जागरूक किया।

एसडीएम ने किया राजकीय हाई स्कूल छोछी का औचक निरीक्षण

बेरी। निरीक्षण के दौरान कक्षाओं का जायजा लेते हुए एसडीएम रेणुका नांदल। फोटो :हरिभूमि

बेरी। शनिवार को एसडीएम रेणुका नांदल ने गांव छोछी स्थित राजकीय हाई स्कूल का औचक निरीक्षण किया और सुविधाएं जांची। उन्होंने स्कूल में जरूरी सुविधाओं की जानकारी लेते हुए स्कूल प्रबंधन को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए। उन्होंने स्कूल परिसर में बिजली, पानी,मिड डे मील सहित सभी सुविधाओं का जायजा लिया और कहा कि शिक्षक बच्चों को किताबी ज्ञान के साथ साथ उन्हें खेलों के लिए प्रोत्साहित करें। उन्होंने विद्यार्थियों से जरूरी विषयों पर बातचीत की और साफ-सफाई का जायजा लिया। इसके अलावा उन्होंने मिड-डे मिल की जांच की। इस बीच उन्होंने कक्षाओं का निरीक्षण करते हुए बच्चों से पढ़ाए जा रहे पाठ के बारे में जानकारी ली।

वर्ल्ड मेडिकल कॉलेज में विद्यार्थियों और कर्मियों को किया नशे के दुष्प्रभाव के प्रति जागरूक

हरिभूमि न्यूज ▶▶| झज्जर

शनिवार को वर्ल्ड मेडिकल कॉलेज में तम्बाकू निषेध जागरूकता अभियान के तहत संस्थापक डॉक्टर नरेंद्र सिंह के संयोजन से कॉलेज परिसर में तीन दिवसीय कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इसमें मेडिकल कॉलेज के छात्र- छात्राओं द्वारा धूम्रपान विरुद्ध पोस्टर प्रतियोगिता, नुक्कड़. नाटक एवं मैराथन का आयोजन किया गया। जिसमे अस्पताल के वरिष्ठ डॉक्टर एवं अन्य कर्मचारियों ने भी बढ़ चढ़ कर हिस्सा लिया। इससे पहले 30 मई को एक गेस्ट लेक्चर की श्रृंखला आयोजित की गई जिसमे कॉलेज के प्राचार्य एवं नाक कान गला रोग विषेशज्ञ डॉक्अर जे सी पासी, पीजीआई रोहतक के टीबी एवं छाती रोग विषेशज्ञ प्रोफेसर डॉक्टर विपुल कुमार एवं वर्ल्ड मेडिकल कॉलेज के मनोरोग विभाग के प्रोफेसर डॉक्टर हरीश वशिष्ठ ने अपने-अपने संबोधन में मेडिकल कॉलेज के छात्र- छत्राओं एवं अन्य कर्मचारियों को धूम्रपान एवं तम्बाकू के सेवन से दूर रहने और उसके दुष्प्रभाव, रोकथाम एवं उपचार पर अपने विचार व्यक्त किए।

झज्जर। जागरूकता रैली निकालते हुए वर्ल्ड मेडिकल कॉलेज के विद्यार्थी।

विभिन्न प्रतियोगिताओं में छात्रों ने दिखाई प्रतिभा

■ हेल्दी फूड कॉम्पटीशन में छात्रों ने पौष्टिक और स्वादिष्ट व्यंजनों को सुंदर ढंग से प्रस्तुत किया

हरिभूमि न्यूज ▶▶| झज्जर

शनिवार को इंडो अमेरिकन स्कूल में एक रंगारंग कार्यक्रम का आयोजन किया गया। जिसमें छात्रों के लिए कई प्रकार की प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। इन प्रतियोगिताओं में हेल्दी फूड कॉम्पटीशन, फैंसी ड्रेस कॉम्पटीशन और स्लाद डेकोरेशन कॉम्पटीशन शामिल रहा। कार्यक्रम में छात्रों ने बढ़-चढ़कर भाग लिया और अपनी प्रतिभा, रचनात्मकता तथा आत्मविश्वास का परिचय दिया। हेल्दी फूड कॉम्पटीशन में छात्रों ने पौष्टिक और स्वादिष्ट व्यंजनों को सुंदर ढंग से प्रस्तुत किया। इस प्रतियोगिता का उद्देश्य बच्चों को स्वस्थ भोजन के प्रति जागरूक करना और उनके खान-पान में संतुलन बनाए रखने की प्रेरणा देना था। इसमें यू केजी क्लास से देव प्रथम, दिव्यांशी द्वितीय और लावण्या तृतीय स्थान पर रही।

एल केजीसे किश्वीश प्रथम, जयंत द्वितीय और जयंत पुत्र गुलाब सिंह तृतीय स्थान पर रहे। कक्षा नर्सरी से कनिष्का प्रथम, अनन्या द्वितीय व हनित तृतीय स्थान पर रहे। स्कूल निदेशक बिजेंद्र कादियान ने अपने संबोधन में कहा कि इस प्रकार की प्रतियोगिताएं बच्चों के सर्वांगीण विकास में सहायक होती है।

झज्जर। प्रतियोगिता के दौरान उपस्थित विद्यार्थी एवं स्टॉफ सदस्य। फोटो :हरिभूमि

मेरिट प्राप्त करने वाले विद्यार्थी हुए सम्मानित

बहादुरगढ़। समारोह में अतिथियों के साथ सम्मानित विद्यार्थी। फोटो :हरिभूमि

■ बच्चों को स्मृति चिह्न भेंट कर उनका उत्साह बढ़ाया

हरिभूमि न्यूज ▶▶| बहादुरगढ़

गांव छारा स्थित बाबा संतोक दास धर्मशाला में मुस्कान दलाल प्रतिभा सम्मान समारोह का आयोजन हुआ। सरकारी स्कूल में पढ़ाई कर मेरिट सूची में स्थान प्राप्त करने वाले विद्यार्थी इस कार्यक्रम में सम्मानित किए गए।

समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में राष्ट्रीय किसान नेता रमेश दलाल और दलाल खाप के प्रवक्ता कप्तान मान सिंह दलाल उपस्थित रहे। विशिष्ट अतिथि के रूप में जिला परिषद झज्जर के वाइस चेयरमैन मास्टर राजीव दलाल ने शिरकत की। इन्होंने बच्चों को स्मृति चिह्न भेंट कर उनका उत्साह बढ़ाया। कार्यक्रम में 92 बच्चों को सम्मानित किया गया। इनमें सरकारी स्कूलों के साथ साथ ग्रामीण स्कूल छारा और संस्कार स्कूल छारा के मेधावी बच्चे भी शामिल रहे। मुख्य आकर्षण का केंद्र ग्रामीण स्कूल छारा के बच्चों द्वारा लगाई गई सुंदर लेख और रोबोटिक्स प्रदर्शनी रही। प्रवासी मजदूरों के बच्चों को पढ़ाने वाली संस्था इंडेप्थ विजन फाउंडेशन और नव पंख संस्था झज्जर को भी सम्मानित किया गया। मुस्कान दलाल फाउंडेशन के संस्थापक मास्टर प्रदीप दलाल ने कहा कि समारोह का उद्देश्य विद्यार्थियों को उनकी मेहनत के लिए सम्मानित करना और उन्हें आगे की पढ़ाई व करियर के लिए प्रोत्साहित करना है। इंडेप्थ विजन फाउंडेशन की तरफ से पूनम देशवाल ने सभी को इम्युनिटी बूस्टर किट भेंट की। कार्यक्रम को सफल बनाने में ऋषि दलाल, कप्तान जीत सिंह, सविता दलाल, पंचायत सदस्य मास्टर अनिल दलाल, राजपाल आर्य, राकेश, विश्वदीप दलाल, सतपाल पहलवान, नीलेश सरपंच मांडोठी, अशोक नंबरदार, जगमेंदर लाला, रविंद्र दलाल, राकेश दलाल आदि का सहयोग रहा।

मार्ग पर जलभराव से ग्रामीणों को हो रही परेशानी

बहादुरगढ़। जलभराव की समस्या दिखाते ग्रामीण। फोटो :हरिभूमि

बहादुरगढ़। गांव नूना माजरा में स्थित शहीद रिसाल सिंह मार्ग की हालत बेहद खराब है। यहां काफी समय से जलभराव की समस्या गहराई हुई है। इस वजह से गांव के लोग बहुत परेशान है। कबोसिया पाना के निवासी राजेंद्र जून, संदीप, विक्की, बिट्टू, नान्हा अंग्रेज आदि का कहना है कि शहीद रिसाल सिंह मार्ग पर पिछले लंबें समय से जलभराव की समस्या गहराई हुई है। आज तक इस जलभराव की समस्या का समाधान नहीं हुआ है। पिछले कई वर्षों से इसी गांव से बहादुरगढ़ विधानसभा से विधायक चुनकर आ रहे हैं। फिर भी यहां पर जल निकासी का उचित प्रबंध न होने के कारण हम लोगों को आज भी जलभराव की समस्या का सामना करना पड़ रहा है। जलभराव के कारण बच्चों, युवाओं, बुजुर्गों, महिलाओं को गंदे पानी के बीच से होकर गुजरना पड़ता है। ग्राम वासियों ने शासन व प्रशासन से मांग करते हुए कहा कि जल्द से जल्द शहीद रिसाल सिंह मार्ग पर गहराई इस समस्या का समाधान किया जाएगा। ताकि लोगों को राहत मिले।

छात्रों को नशे के प्रति जागरूक किया

बहादुरगढ़। गांव मांडोठी स्थित राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय में एक जागरूकता शिविर का आयोजन हुआ। शिविर में सामुदायिक पुलिसिंग टीम ने विद्यार्थियों को यातायात नियमों की जानकारी दी तथा नशे के दुष्प्रभाव के प्रति जागरूक किया। निरीक्षक सतीश कुमार ने कहा हमें यातायात नियमों की जानकारी रखनी चाहिए और उनका पालन करना चाहिए। इसके अलावा नशा समाज में बेहद गंभीर बुराई है। नशे के कारण अपराध और दुर्घटनाएं बढ़ती हैं। एक व्यक्ति के नशे करने की लत उसके पूरे परिवार को बर्बाद कर देती है। हमें नशे से दूर रहना चाहिए और दूसरों को भी जागरूक करना चाहिए। आजकल साइबर अपराध भी बढ़ रहा है। इसलिए सतर्क रहें।

अध्यापकों को अध्यापन के नए तरीकों से कराया अवगत

झज्जर। एल ए वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय में एक दिवसीय सीबीएसई की तरफ से बिल्डिंग कैपेसीटी इन हाउस प्रोग्राम की तरफ से स्ट्रेस मैंजमेंट वर्कशाप का आयोजन किया गया। इसमें स्कूल के सभी टीचिंग स्टॉफ ने भाग लिया । इस वर्कशॉप का उद्देश्य सभी अध्यापकों को स्ट्रेस फ्री इन्वारमेंट में बच्चों को सार्थक शिक्षा प्रदान करना रहा। सीबीएसई रिसोर्स पर्सन आकाश सिंह ने सभी अध्यापकों को एक नए अंदाज से बच्चों को पढ़ाने के तरीके बताए। स्कूल प्राचार्या निधि कादियान नें बताया कि सीबीएसई रिसोर्स पर्सन आकाश सिंह ने अध्यापकों को आज के इस तनाव पूर्ण वातावरण में बच्चों को स्ट्रेस फ्री कक्षाओं से सभी बच्चों को एक सरल तरीके से शिक्षा प्रदान करवाना है।

झज्जर। कार्यक्रम के दौरान उपस्थित विषय विशेषज्ञ एवं स्कूल स्टॉफ सदस्य।

बहादुरगढ़ में मिशन एडमिशन को लेकर विद्यार्थियों में उत्साह

■ 9 जून तक महाविद्यालय में नि: शुल्क रजिस्ट्रेशन करवाने की सुविधा

हरिभूमि न्यूज ▶▶| बहादुरगढ़

कॉलेजों में दाखिले की प्रक्रिया चल रही है। लाइनपार स्थित वैश्य आय कन्या महाविद्यालय में भी दाखिले के लिए लगातार आवेदन आ रहे हैं। प्राचार्या डॉ. राजवंती शर्मा ने बताया कि महाविद्यालय में स्नातक कक्षाओं में विषय चयन के बारे में सही मार्गदर्शन करके छात्राओं को निशुल्क रजिस्ट्रेशन की सुविधा भी मुहैया करवाई जा रही है ताकि छात्राएं कोई सही विषय का चयन कर अपने भविष्य को संवार सके।

10 से 1 बजे तक खुला रहेगा कॉलेज

छात्राएं 9 जून तक महाविद्यालय में आकर निशुल्क रजिस्ट्रेशन करवा सकती हैं। छात्राओं की सुविधा के लिए महाविद्यालय रविवार को 10 बजे से दोपहर एक बजे तक खुला रहेगा। शिक्षा ग्रहण करने के साथ-साथ महाविद्यालय छात्राओं के सर्वांगीण विकास के लिए सदैव तत्पर रहता है। एडमिशन नोडल ऑफिसर डॉ. नेहा नैन ने बताया की छात्राओं की पढ़ाई में रुचि बढ़ाने के लिए महाविद्यालय एसी लाइब्रेरी में विभिन्न पुस्तकों के माध्यम से छात्राओं को ज्ञानवर्धन करने का अवसर प्रदान किया जाता है।

बहादुरगढ़। कॉलेज में आवेदन करने पहुंची छात्रा।

छह कॉलेजों में शारीरिक शिक्षा बीए में वैकल्पिक विषय

हरिभूमि न्यूज ▶▶| झज्जर

विभिन्न कॉलेजों में बीए, बीएससी, बीकॉम, बीबीए और बीसीए आदि स्नातक कक्षाओं के दाखिलों के लिए ऑनलाइन आवेदन जारी हैं। विद्यार्थी नौ जून तक उच्चतर शिक्षा विभाग के एडमिशन पोर्टल पर ऑनलाइन आवेदन कर सकते हैं। विद्यार्थी विषयों का चयन केवल अपने नंबर देखकर या सहपाठियों की पसंद के आधार पर न करें, बल्कि अपनी रुचि, अभिवृत्ति और भविष्य की योजनाओं को ध्यान में रखकर करें।

जिले के चार सरकारी और दो एडिड कॉलेजों में बीए में शारीरिक शिक्षा का वैकल्पिक विषय उपलब्ध है। इनमें राजकीय स्नातकोत्तर नेहरू महाविद्यालय, राजकीय महाविद्यालय बादली, राजकीय महाविद्यालय बहादुरगढ़, राजकीय महाविद्यालय जसौर खेड़ी, महाराजा अग्रसेन महिला महाविद्यालय और वैश्य आर्य कन्या महाविद्यालय बहादुरगढ़ सम्मिलित हैं। उधर नए शैक्षणिक सत्र से राजकीय महाविद्यालय छारा में बैचलर ऑफ फिजिकल एजुकेशन, हेल्थ एजुकेशन एंड स्पोर्ट्स तथा राजकीय महाविद्यालय दूबलधन में बैचलर ऑफ फिजिकल एजुकेशन कोर्स शुरू करने की स्वीकृति भी प्रदान की गई है। शारीरिक शिक्षा का उद्देश्य केवल व्यायाम और खेलों की जानकारी देना नहीं होता, बल्कि यह विद्यार्थियों के शारीरिक, मानसिक, सामाजिक और नैतिक विकास को भी सुनिश्चित करता है। शारीरिक शिक्षा छात्रों के संपूर्ण व्यक्तित्व के विकास में सहायक होती है।

सूचना

हम, धर्मपाल पुत्र दीपचंद व शकुन्तला पत्नी धर्मपाल निवासी किला कॉलोनी, कोसली रोड, मकान नंबर 199/16, झज्जर, तहसील व जिला झज्जर बयान करते हैं कि हमारा पुत्र अरूण व पुत्रवधु सविता हमारे कहने-सुनने से बाहर हैं। इसलिये हम इनको अपनी चल-अचल सम्पत्ति से बेदखल करते हैं। इनसे लेन-देन, व्यवहार करने वाला स्वयं जिम्मेवार होगा। हमारी व हमारे परिवार की कोई जिम्मेवारी नहीं होगी।

सूचना

मैं, अशोक कुमार यादव पुत्र रामेश्वर यादव निवासी वार्ड नंबर-1, कंवर सिंह कालोनी, झज्जर, तहसील व जिला झज्जर बयान करता हूं कि मेरे पुत्र हर्षित यादव के स्कूल रिकार्ड में पिताजी के कॉलम में अशोक यादव नाम दर्ज है। असल में मेरा पूरा नाम अशोक कुमार यादव है। मेरे पुत्र हर्षित यादव के स्कूल रिकार्ड में मेरा नाम अशोक यादव की जगह अशोक कुमार यादव किया जाए।

खबर संक्षेप

बालाजी गुणगान महोत्सव 14 को

बहादुरगढ़। श्रीबालाजी सेवा मंडल द्वारा बालाजी महाराज का गुणगान महोत्सव धूमधाम से मनाया जाएगा। मंडल के अध्यक्ष आनंद अग्रवाल ने जानकारी देते हुए बताया कि 14 जून शनिवार को श्री बालाजी सेवा मंडल द्वारा नजफगढ़ रोड स्थित राधा कृष्ण गार्डन में सायं प्रभु इच्छा तक 22वां गुणगान महोत्सव मनाया जाएगा।
श्रीराम संकीर्तन परिवार द्वारा संगीतमय सुंदरकांड पाठ भी किया जाएगा। गुणगान महोत्सव में रेशमी शर्मा समस्तीपुर व कुंजबिहारी दास श्री धाम वृंदावन अपनी मधुर वाणी से बालाजी महाराज की महिमा का गुणगान करेंगे। मंच का संचालन बीडी सिंधी द्वारा किया जाएगा। कार्यक्रम बाबा कालिदास महाराज, महामंडलेश्वर गणेश महाराज तथा पंडित सुभाष हरीतश महंत बालाजी मंदिर हसनगढ़ के पावन सानिध्य में होगा। बालाजी मंदिर के प्रधान रमेश गुप्ता बिल्लू बालाजी मंदिर नजफगढ़ रोड से राधा कृष्ण गार्डन उत्सव स्थल पर पावन ज्योत लेकर पहुंचेंगे।

मासिक वैदिक यज्ञ एवं सत्संग कार्यक्रम आज

झज्जर। आर्य समाज झज्जर का मासिक वैदिक यज्ञ, भजन एवं सत्संग कार्यक्रम आज आयोजित किया जाएगा। आर्य समाज के मंत्री लाला प्रकाशवीर आर्य ने बताया कि कार्यक्रम के पहले चरण में वैदिक यज्ञ होगा। जिसमें ब्रह्मचारी इंद्रजीत अरोड़ा यज्ञ ब्रह्मा होंगे। वहीं कार्यक्रम के दूसरे चरण में भजन एवं सत्संग होगा। इस कार्यक्रम में गुरुग्राम निवासी आचार्य हर्ष प्रिय आर्य मुख्य वक्ता के रूप में उपस्थित रहेंगे। वहीं आर्य भाजोपदेशक दलीप सैनी, जितेंद्र बरानी, डॉक्टर जेके सरदाना अपने मधुर भजनों की प्रस्तुति देंगे।

डीसी ने किया ड्रेन व जल निकासी नालों की सफाई कार्यों का निरीक्षण

बाढ़ नियंत्रण उपायों से जुड़े प्रोजेक्ट की देरी पर होगी जवाबदेही तय : उपायुक्त

डीसी ने केसीबी ड्रेन और साथ लगती मातन लिंक ड्रेन, डीघल लिंक ड्रेन, धांधलान लिंक ड्रेन, मदाना लिंक ड्रेन सहित अन्य जल निकासी नालों की सफाई व्यवस्था का मौके पर मुआयना किया।

हरिभूमि न्यूज ⏭ झज्जर

शनिवार को डीसी स्वप्निल रविंद्र पाटिल ने बाढ़ नियंत्रण उपायों से जुड़े प्रोजेक्ट की प्रगति, ड्रेन व जल निकासी नालों के सफाई कार्यों निरीक्षण किया। उन्होंने केसीबी ड्रेन और साथ लगती मातन लिंक ड्रेन, डीघल लिंक ड्रेन, धांधलान लिंक ड्रेन, मदाना लिंक ड्रेन सहित अन्य जल निकासी नालों की सफाई व्यवस्था का मौके पर मुआयना किया। उन्होंने संबंधित अधिकारियों को कहा कि आपके पास 15 जून तक का समय है, इसलिए कार्यों में तेजी लाएं। कार्यों की प्रगति की रिपोर्ट से उनके कार्यालय में भिजवाएं। उन्होंने कहा कि कार्य में लापरवाही बर्दाश्त नहीं की जाएगी।

झज्जर। सिंचाई विभाग के प्रोजेक्ट का निरीक्षण करते हुए डीसी स्वप्निल रविंद्र पाटिल। फोटो : हरिभूमि

निर्माणाधीन सड़क मार्ग की गुणवत्ता जांच के लिए भरवाए सैंपल

डीसी ने दौरे के दौरान निर्माणाधीन छुड़ानी कबलाना सड़क मार्ग का निरीक्षण किया। उन्होंने कहा कि जिलाभर में आवश्यकता अनुसार सड़क मार्गों पर रिपेयर वर्क चल रहा है। विभाग को निर्देश दिए गए हैं, निर्माण सामग्री की गुणवत्ता की निरंतर जांच करें। नियमानुसार जांच करवाएं। कार्य की गुणवत्ता में किसी प्रकार की लापरवाही बर्दाश्त नहीं की जाएगी। उन्होंने सड़क निर्माण कार्य में उपयोग लाई जा रही सामग्री का सैंपल भरवाया।

बहादुरगढ़। बच्चों को योगाभ्यास कराते जगदीश कुमार सहवाग। फोटो : हरिभूमि

नया गांव में विद्यार्थियों को कराया योगाभ्यास

हरिभूमि न्यूज ⏭ बहादुरगढ़

नया गांव के राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय में योगाचार्य जगदीश कुमार सहवाग द्वारा निःशुल्क योग प्राणायाम शिविर का आयोजन किया गया। जिसकी अध्यक्षता प्रिंसिपल गीता देवी ने की। जगदीश कुमार सहवाग ने योगाभ्यास कराते हुए विद्यार्थियों से कहा कि योग जीवन का सार है।

योग से उत्तम स्वास्थ्य की प्राप्ति होती है। योग एक विज्ञान है। योग नकारात्मक उर्जा को नष्ट करने का माध्यम है। प्रतिदिन योग करने से मानसिक शांति व एकाग्रता की प्राप्ति होती है तथा शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ती है।

आचार्य जगदीश ने कहा कि भोजन के बाद मानव की पहली आवश्यकता शिक्षा है। अच्छी शिक्षा प्राप्त करके हम सभी अपने जीवन का निर्माण कर सकते हैं। हम सभी के लिए राष्ट्र धर्म प्रथम है। हमारे अंदर देश भक्ति का भाव सर्वोपरी होना चाहिए। ललिता, पूजा शर्मा, ज्योति, कुसुम, सीमा, अनुप्रिया, सुनिता, बबीता, सरिता, पवन कुमार, सीमा, सुदेश कुमारी, मंजू, राजवंती, रजनेश आदि स्टाफ सदस्य भी इस अवसर पर मौजूद रहे।

शिविर के दौरान योगाभ्यास करते विद्यार्थी

रणबीर सिंह मॉडल स्कूल में ग्रीष्मकालीन शिविर संपन्न

बहादुरगढ़। रणबीर सिंह मॉडल स्कूल में कक्षा नर्सरी से आठवीं तक के विद्यार्थियों के लिए ग्रीष्मकालीन शिविर का आयोजन किया गया। बच्चों ने विभिन्न रचनात्मक और व्यक्तित्व विकास से जुड़ी गतिविधियों में भाग लिया तथा बहुत कुछ नया सीखा। शिविर के दौरान आर्ट एंड क्राफ्ट, बिना आंच के खाना बनाना, नृत्य, व्यक्तिगत विकास, पपेट मेकिंग, योग, भाषण कला आदि गतिविधियां हुई। प्रिंसिपल किरण वर्मा ने विद्यार्थियों को आशीर्वाद दिया और उन्हें ग्रीष्मकालीन अवकाश की हार्दिक शुभकामनाएं दी।

जीडी गोयनका के विद्यार्थियों का स्टेट चैंपियनशिप के लिए चयन

हरिभूमि न्यूज ⏭ बहादुरगढ़

एचएल सिटी स्थित जीडी गोयनका पब्लिक स्कूल के विद्यार्थियों ने हरियाणा चेस एसोसिएशन द्वारा आयोजित चेस प्रतियोगिता में उत्कृष्ट प्रदर्शन करते हुए अपने-अपने भार वर्ग में प्रथम स्थान प्राप्त करके स्कूल व अभिभावकों का नाम रोशन किया है।

आयु वर्ग 17 में कक्षा दसवीं की छात्रा सोनाक्षी ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। वहीं आयु वर्ग 11 में अतिक्ष ने भी शानदार खेल का प्रदर्शन कर शीर्ष स्थान हासिल किया। इन दोनों प्रतिभावान छात्रों का चयन अब राज्य स्तर की चेस प्रतियोगिता के लिए हुआ है।

विद्यालय की निदेशिका शैलजा जून ने बच्चों की इस सफलता पर हार्दिक बधाई दी और कहा कि यह विद्यालय के लिए गर्व की बात है। उन्होंने कहा कि यह उपलब्धि बच्चों की मेहनत, लगन और शिक्षकों के मार्गदर्शन का परिणाम है। विद्यालय परिवार ने दोनों विजेताओं को आगामी प्रतियोगिता के लिए शुभकामनाएं दी हैं।

बहादुरगढ़। एचएल सिटी स्थित जीडी गोयनका पब्लिक स्कूल में विजेता छात्रा को सम्मानित करती निदेशिका शैलजा जून। फोटो : हरिभूमि

बहादुरगढ़। महिलाओं के साथ तंबाकू के प्रति जागरूकता का संदेश देती छात्रा।

पोस्टर, स्लोगन से तंबाकू के दुष्प्रभाव समझाए

हरिभूमि न्यूज ⏭ बहादुरगढ़

वैश्य आर्य शिक्षण महिला महाविद्यालय की स्वयंसेविकाओं ने विश्व तंबाकू निषेध दिवस के मौके पर पोस्टर व स्लोगन बनाकर समाज को तंबाकू उत्पादों के दुष्परिणामों के विषय में जागरूक किया।

सुषमा, आशु कुमारी, पायल शर्मा, प्रेरणा, डिंपल आदि स्वयंसेविकाओं ने पोस्टर व स्लोगन के माध्यम से लोगों को जागरूक करते हुए बताया कि तंबाकू के सेवन के कारण हमें कई प्रकार का नुकसान हो सकता है। धूम्रपान से फेफड़े कमजोर हो जाते हैं। इनसे बचने के लिए सजगता और तंबाकू से दूरी ही एकमात्र उपाय है। इसका आयोजन एनएसएस इकाई, आइक्यूएसी सेल व वाईआरसी सेल द्वारा किया गया। छात्राओं ने लोगों को बताया कि हर वर्ष 31 मई को विश्व तंबाकू निषेध दिवस मनाया जाता है। इस दिन का उद्देश्य तंबाकू सेवन के व्यापक प्रसार और नकारात्मक स्वास्थ्य प्रभावों की ओर ध्यान आकर्षित करना है।

हिंदी कैलिग्राफी प्रतियोगिता में लक्ष्य मोर ने पाया पहला स्थान

हरिभूमि न्यूज ⏭ झज्जर

एच डी वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय साल्हावास में हिंदी सुलेखन प्रतियोगिता आयोजित की गई। जिसमें छठी से आठवीं कक्षाओं के विद्यार्थियों ने बढ़-चढ़कर भाग लिया। विद्यालय प्राचार्य सतबीर सिंह की अध्यक्षता में आयोजित इस प्रतियोगिता का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों की लिखाई और वर्णो की बनावट में सुधार करना रहा। हिंदी सुलेखन प्रतियोगिता में निर्णायक की भूमिका निभाते हुए एक्टिविटी इंचार्ज कमलेश ढिल्लों ने बताया कि छठी कक्षा से लक्ष्य मोर ने प्रथम स्थान प्राप्त किया, वहीं केशिका ने द्वितीय और खुशी ने तृतीय स्थान प्राप्त किया है।

सातवीं कक्षा से अंशु ने प्रथम, पलक ने द्वितीय और निकिता ने तृतीय स्थान प्राप्त किया हैं। आठवीं कक्षा से हिमांशी ने प्रथम, हेमा ने द्वितीय और सारिका ने तृतीय स्थान प्राप्त किया है। इस अवसर पर एच डी ग्रुप डायरेक्टर रमेश गुलिया ने विद्यार्थियों को प्रोत्साहित करते हुए बताया कि किसी भी भाषा में सुंदर लिखाई विद्यार्थी के लिए किसी वरदान से कम नहीं है। इससे अंक बढ़ाने में मदद मिलती है, वहीं साफ व सुन्दर लेखन सबको आकर्षित करता है। सुंदर लेख विद्यार्थी का गहना होता है। प्रतियोगिता के समापन पर सचिव विशाल नेहरा एवं हेमन्त गुलिया ने विजेता विद्यार्थियों को इनाम देकर सम्मानित किया और उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की।

झज्जर। प्रतियोगिता के उपरांत उपस्थित होनहार प्रतिभागी।

कार्यशाला में शिक्षकों को दिया प्रशिक्षण

हरिभूमि न्यूज ⏭ बहादुरगढ़

झज्जर रोड स्थित त्रिवेणी मेमोरियल सीनियर सेकेंडरी स्कूल में किशोर शिक्षा से संबंधित एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गय।

कार्यक्रम का शुभारंभ रिसोर्स पर्सन पूनम सक्सेना, त्रिवेणी स्कूल के संचालक एस श्याम, निदेशिका संगीता वर्मा, प्रिंसिपल अनिल कुमार ने दीप प्रज्वलित कर किया। कार्यक्रम में प्रशिक्षकों ने शिक्षकों को विद्यार्थियों में आत्मविश्वास व उनके सकारात्मक दृष्टिकोण को बढ़ाने से संबंधित प्रशिक्षण दिया।

कार्यक्रम के विभिन्न सत्रों में किशोरावस्था के दौरान शारीरिक, भावनात्मक और मनोवैज्ञानिक परिवर्तनों को समझना, प्रभावी संचार व परामर्श तकनीकें, जीवन कौशल तथा मूल्य आधारित शिक्षा को बढ़ावा देना, बदमाशी और इंटरनेट सुरक्षा को संबोधित करना सहित व स्कूल वातावरण बनाना आदि के बारे में विस्तार से बताया गया।

रिसोर्स पर्सन ने विभिन्न प्रकार की गतिविधियों के माध्यम से शिक्षकों का मनोरंजन भी किया। कार्यशाला के अंत में उन्होंने बताया कि विद्यार्थियों को उनकी आवश्यकताओं, क्षमताओं व रुचियों के अनुसार प्रेरणा प्रदान करने तथा समुचित लक्ष्य के निर्धारण में अध्यापक की महत्वपूर्ण भूमिका होती है।

बहादुरगढ़। कार्यशाला में मौजूद शिक्षक। फोटो : हरिभूमि

हरिभूमि
आवश्यक सूचना
जिन पाठकों को अखबार मिलने में किसी भी प्रकार की असुविधा हो रही हो या उनके घर में कोई अन्य अखबार दिया जा रहा हो वह इन टेलीफोन नम्बरों पर सम्पर्क करें या व्हाट्सअप करें :-
बहादुरगढ़ : सूरजमल वाली गली, गणपति ट्रैवलर्स के ऊपर, नजदीक टैक्सी स्टैंड, बहादुरगढ़
झज्जर :- पुराना बर्फ खाना रोड, शिव चौक, झज्जर
फोन : 8295738500, 8814999142, 8295157800, 9253681005

मृत्यु अंत नहीं है
मृत्यु कभी भी अंत नहीं हो सकती
मृत्यु एक पथ है, जीवन एक यात्रा है
आत्मा पथ प्रदर्शक है।

हरिभूमि
राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक
इस शोकाकुल समय में हम आपके सहभागी हैं।
तेरहवीं/श्रद्धान्जलि/शोक संदेश
आप अर्पित कीजिये अपने श्रद्धा-सुमन हरिभूमि के माध्यम से

साईज	संस्करण	विशेष छूट राशि
5×8 सें.मी 10×8 सें.मी	स्थानीय संस्करण के अन्दर के पृष्ठ पर	रु. 2500/- रु. 3000/-

+5% GST Extra
नोट : विशेष छूट राशि केवल उपरोक्त साईज पर मान्य। अन्य किसी साईज के लिए कार्ड रेट लागू।
अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें
झज्जर : हरिभूमि कार्यालय, पुराना बर्फ खाना रोड, शिव चौक, फोन : 8295876400
बहादुरगढ़ : सुरजमल वाली गली, रोहतक रोड, गणपति ट्रैवल्स के ऊपर, 8295852900

महिलाओं ने चेयरपर्सन को बताई पार्क की समस्याएं

हरिभूमि न्यूज ⏭ बहादुरगढ़

नगर परिषद चेयरपर्सन सरोज राठी ने शनिवार को देवीलाल पार्क का दौरा कर मौजूदा समस्याओं का जायजा लिया। देवीलाल पार्क में महिलाओं ने चेयरपर्सन सरोज राठी को पार्क की मौजूदा समस्याओं से अवगत कराया।

महिलाओं ने कहा कि पार्क में महिलाएं भजन कीर्तन करती हैं। इसके लिए जो शेड बनी हुई है, उसमें बरसात के समय पानी टपकता है। इसलिए उसकी मरम्मत कराई जाए और पार्क में बैठने के लिए बेंच रखे जाए। चेयरपर्सन सरोज राठी ने बिमला चौधरी व मौजूद महिलाओं से कहा कि देवीलाल पार्क में नए बेंच रखवा दिए जाएंगे। शेड की मरम्मत भी जल्द करवा दी जाएगी। राठी ने महिलाओं से कहा कि शहर के पार्कों में ज्यादा से ज्यादा सुविधाएं आमजन के लिए उपलब्ध हो, इस बात का विशेष ध्यान नगर परिषद द्वारा रखा जा रहा है। उन्होंने महिलाओं से कहा कि आप निश्चिंत रहे। जो समस्याएं आपने पार्क की बताई है, उनका जल्द से जल्द समाधान कर दिया जाएगा। इस अवसर पर पार्षद राजेश तंवर, मनमोहित गुप्ता, सुमित बराही, संदीप कुमार आदि मौजूद रहे।

बहादुरगढ़। चेयरपर्सन सरोज राठी को मरम्मत करने के लिए शेड को दिखाती महिलाएं। फोटो : हरिभूमि

शहीद ईश्वर सिंह की पुण्यतिथि पर किया नमन

बेरी। महान देश भक्तों की बदौलत आज हम आजादी की खुली हवा में सांस ले रहे हैं। आजादी के आंदोलन से लेकर आजादी मिलने के बाद मां भारती की रक्षा के लिए क्षेत्र के असंख्य वीर सैनिक देश सेवा के लिए तत्पर हैं। यह बात एसडीएम रेणुका नांदल ने गांव बहराना में उपनिरीक्षक शहीद ईश्वर सिंह की पुण्यतिथि पर उनकी प्रतिमा पर पुष्पांजलि अर्पित करते हुए कही। इस दौरान सीआरपीएफ की टीम ने गांव बहराना पहुंचकर शहीद उपनिरीक्षक ईश्वर सिंह को श्रद्धांजलि अर्पित की। उन्होंने बताया कि सीआरपीएफ में उपनिरीक्षक के पद पर तैनात ईश्वर सिंह 31 मई 2005 को दुश्मनों से लोहा लेते हुए शहीद हो गए थे।

बेरी। शहीद के चित्र पर पुष्प अर्पित कर नमन करते हुए एसडीएम रेणुका नांदल।

40 सहयोग शिक्षक तैयार किए

बहादुरगढ़। शिविर में मौजूद रोशनी गुलिया व अन्य। फोटो : हरिभूमि

बहादुरगढ़। हरियाणा में सहयोग शिक्षक तैयार करने के लिए कार्यक्रम किए जा रहे हैं। इसी के तहत बहादुरगढ़ ब्लॉक में योग शिक्षका रोशनी गुलिया के नेतृत्व में दो जगह योग शिविर लगाए गए। सुबह के वक्त वार्ड 13 में वीर सावरकर पार्क तथा शाम को एचएल सिटी में फव्वारा चौक के पास शिविर आयोजन किए गए। गत 16 मई को शुरू हुए ये 15 दिवसीय शिविर शुक्रवार को संपन्न हो गए। इस दौरान 40 सहयोग शिक्षक तैयार किए गए। रोशनी गुलिया ने बताया कि हरियाणा प्रांत की महिला प्रभारी अमर रावी के प्रयासों से बहादुरगढ़ में 50 सहयोग शिक्षक बनाने का लक्ष्य रखा गया था। इनके नाम के प्रमाण पत्र हरिद्वार से बन कर आने के बाद इनको वितरित कर दिए जाएंगे। हवन के बाद शिविर संपन्न हुए हैं।

बाल व्यक्तित्व विकास शिविर संपन्न

बहादुरगढ़। ऑक्सफोर्ड पब्लिक स्कूल में शनिवार को बाल व्यक्तित्व विकास शिविर का समापन हुआ। समापन समारोह में नगर परिषद की चेयरपर्सन सरोज राठी, शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास के प्रांतीय संयोजक डॉ. इंद्रजीत सिंह, सूर्या फाउंडेशन के संचालक कामेश्वर दलाई आदि ने बतौर मुख्य अतिथि शिरकत की। इस साप्ताहिक शिविर में छात्रों के आत्मविकास, नेतृत्व कौशल, संवाद कौशल, शारीरिक क्षमता, बौद्धिक विकास और आत्मविश्वास बढ़ाने के लिए बल दिया गया। शिविर में छात्रों ने विभिन्न रचनात्मक गतिविधियों में बढ़-चढ़कर भाग लिया। इंस्पेक्टर सतीश कुमार व यशपाल गांधी भी इस अवसर पर मौजूद रहे। उन्होंने छात्रों के जीवन में अनुशासन, लक्ष्य निर्धारण और सकारात्मक सोच के महत्व से छात्रों को अवगत कराया। सूर्या फाउंडेशन से सत्यनारायण शर्मा, जितेंद्र, मुनेंद्र और उनके साथ विद्यालय की प्रिंसिपल शीला देवी ने शिक्षकों और अतिथियों का धन्यवाद किया।

बहादुरगढ़। समारोह में अतिथियों और शिक्षकों के साथ विद्यार्थी। फोटो : हरिभूमि

प्रदूषण की भयावह होती वैश्विक समस्या और बढ़ते तापमान से मुक्ति पाने का सबसे कारगर उपाय है कि हम ग्रीन इंफ्रास्ट्रक्चर को अपनाने की दिशा में कारगर कदम बढ़ाएं। हालांकि इस दिशा में भी कई चुनौतियां हैं, लेकिन सरकारी स्तर पर ठोस पहल और जन सामान्य की भागीदारी से देश-दुनिया को हरा-भरा बना सकते हैं, भविष्य को सुरक्षित बना सकते हैं।

विशेषः विश्व पर्यावरण दिवस 5 जून

तपते शहरों में ऐसे बढ़ेगा ग्रीन इंफ्रास्ट्रक्चर

कवर स्टोरी
अपराजिता

आगामी 5 जून 2025 को जब हम विश्व पर्यावरण दिवस मनाएंगे, तो हमारे देश के कई बड़े शहर तप रहे होंगे। दिल्ली हो या जयपुर, नागपुर हो या हैदराबाद। देश के कई शहर गर्मियों में तपते द्वीपों में बदल चुके हैं। सिर्फ हम अपने देश के शहरों की ही बात क्यों करें? लाहौर, बीजिंग, न्यूयॉर्क, टोक्यो और दुबई की भी आज की तारीख में यही स्थिति है। सवाल है, इन शहरों में फिर से जीवन को चैन और आराम देने वाली ठंडक कैसे मिले? कंक्रीट के हमारे जंगल, ग्रीन इंफ्रास्ट्रक्चर में कैसे बदलें?

क्या है ग्रीन इंफ्रास्ट्रक्चरः ग्रीन इंफ्रास्ट्रक्चर का मतलब है, ऐसे डिजाइन और ऐसी व्यवस्थाएं, जो प्राकृतिक समाधान प्रस्तुत करें। ये पार्क, छतों पर बागवानी, हरित दीवारों, वर्षा जल संरक्षण, शहरी जंगल, जैविक नालियां, ग्रीन कॉरीडोर और स्वच्छ ऊर्जा से जुड़ी सम्मिलित संरचनाओं का नाम है। यह ग्रीन इंफ्रास्ट्रक्चर न केवल हमारे पर्यावरण की रक्षा करता है बल्कि लोगों को रोजगार, बेहतर स्वास्थ्य और शहरों को अधिक टिकाऊ बनाता है।

बिगड़ते पर्यावरण की वजहें: आजकल जलवायु परिवर्तन और ग्लोबल वॉर्मिंग के कारण भारत ही नहीं दुनिया भर के ज्यादातर शहर, गर्मी से जल रहे हैं। शहरों में अर्बन हीट, आइलैंड इफेक्ट जोर-शोर से देखा जा रहा है। शहरों में कंक्रीट, डामर और प्लास्टिक की अधिकता, जमीन की नमी सोख रही है, जिससे तापमान बढ़ रहा है। यही नहीं जो शहर पहले छायादार पेड़ों की कतारों के हिस्से हुआ करते थे, अब उन शहरों में बड़े-बड़े पेड़ों को काट कर सड़कों का विस्तार और नए-नए मॉल्स बनाए जा रहे हैं, जिससे हमारे पारंपरिक शहरों का ग्रीन आवरण लगातार घट रहा है। कार्बन उत्सर्जन बढ़ रहा है और जल प्रबंधन की विफलता भी हमारे सामने है। शहरों में अंधाधुंध ढंग से बढ़ रहे वाहन, फैक्ट्रियां और कूलिंग सिस्टम से निकलने वाली गैसें, लगातार हमारे शहरों के तापमान बढ़ा रही हैं। दूसरी तरफ अंधाधुंध रिहाईशी ढांचे खड़े कर देने के कारण बारिश का जल बह कर निकल जाता है। धरती में वापस नहीं जा पाता, जिससे न सिर्फ सूखे बल्कि बाढ़ की समस्या भी इससे बढ़ रही है।

बढ़ रही है ग्रीन इंफ्रास्ट्रक्चर की जरूरतः बिगड़ते पर्यावरण की वजह से ही विश्व स्तर पर ग्रीन इंफ्रास्ट्रक्चर की खासी जरूरत बढ़ी है। आज ज्यादातर नगर योजनाकार बार-बार ग्रीन इंफ्रास्ट्रक्चर की जरूरत पर बल देते हैं। विश्व स्वास्थ्य संगठन का मानना है कि 2050 तक दुनिया की करीब 70 फीसदी आबादी शहरों में रह रही होगी और तब आज से कहीं ज्यादा पर्यावरणीय दबाव होगा। साल 2023 की आईपीसीसी रिपोर्ट कहती है, यदि शहरों में हरित क्षेत्र 30 प्रतिशत बढ़ा दिया जाए तो दुनिया के औसतन तापमान में 2 डिग्री सेंटीग्रेड की कमी आ जाएगी। पेरिस, सियोल, मेलबर्न और कोपनहेगन जैसे शहर अब हर नई परियोजना को ग्रीन इंफ्रास्ट्रक्चर में तब्दील कर रहे हैं।

इस दिशा की चुनौतियांः भारत में ग्रीन इंफ्रास्ट्रक्चर बनाना बड़ी चुनौती है, क्योंकि हमारी स्थानीय शहरी निकायों के पास इस पर स्पष्ट दिशा-निर्देश नहीं हैं। साथ ही हमारे नगर निकायों के पास पर्याप्त वित्तीय संसाधनों की भी कमी है। इसलिए हमारे शहर चाहकर भी ग्रीन इंफ्रास्ट्रक्चर को फिलहाल नहीं बढ़ा पा रहे हैं, क्योंकि आम लोग इसे अतिरिक्त खर्च वाला समझते हैं। यही कारण है कि अब बड़े पैमाने पर ऐसी योजनाएं और स्मार्ट सिटी मिशन उभर कर सामने आ रहे हैं, जिनमें ग्रीन कॉरीडोर, अर्बन फॉरेस्ट, रेन वॉटर हार्वेस्टिंग पर जोर दिया जा रहा है। शहरों में कृषि और टेरेस गार्डेनिंग का बढ़ावा भी इसी के चलते हो रहा है। तमाम नए स्टार्टअप यह कर रहे हैं। सीएसआर और ईएसजी की फंडिंग से निजी कंपनियां आजकल हरित परियोजनाओं में निवेश कर रही हैं।

ग्रीन इंफ्रास्ट्रक्चर बढ़ाने के तरीकेः ग्रीन इंफ्रास्ट्रक्चर बढ़ाने के लिए जरूरी है कि सभी शहरी विकास योजनाओं में ग्रीन बजट को अनिवार्य किया जाए। साथ ही बिल्डिंग बाई लॉज में छत पर गार्डेनिंग, वर्षा जल संग्रहण जैसी अनिवार्य योजनाओं को लागू किया जाए। अब जरूरी हो गया है कि शहरी खेती और कम्युनिटी गार्डेनिंग को अनिवार्य किया जाए। हर मुहल्ले में सामूहिक बागवानी प्रोजेक्ट शुरू किए जाएं, नगर निगम स्थानीय सब्जी उत्पादन को बढ़ावा दें, इसके लिए सब्सिडी और बेहतर ट्रेनिंग का सहारा लिया जाए। शहरी घरों की छतों और दीवारों को ज्यादा से ज्यादा हरा किया जाए। इसकी सबसे पहली शुरुआत सरकारी भवनों, विभिन्न सरकारी इमारतों और शहरी विभागों से किया जाए। निजी फ्लैट और कॉम्प्लेक्स में भी ग्रीन इंफ्रास्ट्रक्चर को बढ़ावा देने के लिए कई तरह के टैक्स में छूट दी जाए ताकि लोग ग्रीन इंफ्रास्ट्रक्चर की तरफ आकर्षित हों। शहर की हर इमारत में ग्रीन वाटर ट्रीटमेंट प्लांट लगाना अनिवार्य किया जाए, साथ ही बरसाती नालियों को पुनः डिजाइन करके उन्हें जैविक जल निकासी प्रणाली में बदला जाए।

ये उपाय भी होंगे कारगरः बड़े पैमाने पर शहरों का ग्रीन इंफ्रास्ट्रक्चर तभी विकसित हो सकता है, जब ग्रीन इंफ्रास्ट्रक्चर से जुड़ी इसकी ट्रेनिंग, जैसे लैंडस्केपिंग, वर्टिकल गार्डेनिंग जैसी तकनीकों में युवाओं की ज्यादा से ज्यादा भागीदारी हो। युवाओं को ग्रीन अंबेस्डर बनाकर स्कूल, कॉलेज से ही इस दिशा में उन्हें पर्यावरण हितैषी के रूप में बड़ा किया जाए। शहरों में यदि ग्रीन कैप बढ़ेगा, तो लोग उनके फायदों से भी वाकिफ होंगे और ज्यादा से ज्यादा इसका फायदा उठाना चाहेंगे। इसके लिए जरूरी है कि ग्रीन मैप एप्स के कल्चर को बढ़ावा दिया जाए। ग्रीन कवर एरिया को स्टेटस सिंबल बनाया जाए। इसके लिए एआई और सैटेलाइट तकनीक से इनकी रक्षा और निगरानी भी किया जाना जरूरी है।

ग्रीन इंफ्रास्ट्रक्चर को अपनाने से न केवल हमारी धरती को फिर से हरी-भरी बनाने में मदद मिलेगी बल्कि नई पीढ़ी को उस दहकती हुई गर्मी से छुटकारा मिलेगा, जो आज शहरी जीवन का बड़ा अभिशाप बन चुका है। इसलिए विश्व पर्यावरण दिवस के मौके पर इस पर गंभीरता से सिर्फ सोचा ही न जाए, सिर्फ बहस ही न हो बल्कि इसमें अमल किए जाने की प्रक्रिया तेजी से बढ़े। *

जो मानसून हर वर्ष जून के पहले सप्ताह में भारत में प्रवेश करता था, इस बार मई के अंतिम सप्ताह से पहले ही आ गया। ऐसा होने के पीछे किस तरह के कारण जिम्मेदार हैं और इसके क्या प्रभाव हो सकते हैं, आप जरूर जानना चाहेंगे।

समय से पहले आया मानसून !

बदलाव / रजनी अरोड़ा

मौसम वैज्ञानिकों के मुताबिक इस साल मानसून की रफ्तार इतनी तेज है कि करीब 2 सप्ताह पहले ही देश में एंट्री हो गई है। समय से पहले आए मानसून से हालांकि जन-मानस को गर्मी की तपिश से राहत पहुंची है, लेकिन पर्याप्त तैयारी के अभाव में कई शहर जल भराव की स्थिति का सामना कर रहे हैं।

परेशानी या वरदानः मानसून का जल्दी आना, सिर्फ मौसम का बदलाव नहीं बल्कि हमारे पर्यावरण और जलवायु में हो रहे बड़े बदलावों का भी संकेत है। विशेषज्ञों के अनुसार यह जलवायु परिवर्तन वैश्विक तापमान और समुद्री परिस्थितियों के मिले-जुले प्रभाव का नतीजा है। समुद्री सतह के तापमान के अनुकूल बदलाव पड़ा है। समुद्र का टेंपरेचर सामान्य से ज्यादा रहा, जिसके कारण मानसूनी पश्चिमी हवाएं तेजी से सक्रिय हो गईं।

चिंता का कारणः मानसून का जल्दी आना हालांकि कृषि, वाणिज्य जैसे क्षेत्रों के लिए अच्छा हो सकता है। लेकिन इसके अनियमित-बिगड़ते पैटर्न से बाढ़, लैंडस्लाइड, जलजनित बीमारियां, महामारी जैसी समस्याएं उत्पन्न होने का खतरा भी हो सकता है।

जल्दी आने के कारणः देश में मानसून के जल्दी आने को मौसम-वैज्ञानिक ग्लोबल वार्मिंग का असर मान रहे हैं। जिसके प्रति हमें सजग होना और समुचित कदम उठाने जरूरी हैं।

लानीना और अलनीनो का प्रभावः यह प्रशांत महासागर के तापमान से जुड़ा सिस्टम है। जब प्रशांत महासागर का तापमान ज्यादा गर्म हो जाता है तो उसे अलनीनो कहते हैं, जो भारत के मानसून को कमजोर कर देता है। जब महासागर ठंडा होता है तो यह लानीना कहलाता है, जो मानसून को मजबूत करता है। चूंकि इस साल न ज्यादा गर्मी है और न ज्यादा ठंडक है। यानी ईएनएसओ न्यूट्रल है और यही हालात भारत के मानसून के लिए फायदेमंद है।

इंडियन ओशन डायपोल का पॉजिटिव होनाः कुछ वैज्ञानिक मानते हैं कि आईओडी अरब सागर में नमी के जमाव को बढ़ाता है, जिससे मानसून की हवाएं तेज होती हैं और यह मानसून के जल्दी आने का कारण भी बनता है। तो कुछ वैज्ञानिक इसे भारतीय महासागर के पश्चिमी हिस्से यानी अफ्रीका की तरफ और पूर्वी हिस्से यानी इंडोनेशिया की तरफ पानी का तापमान से जोड़ते हैं। वस्तुतः इनके तापमान में फर्क मिलता है। अगर पश्चिमी हिस्सा गर्म होता है और पूर्वी हिस्सा ठंडा तो यह पॉजिटिव आईओडी कहलाता है। यह मानसून के लिए अच्छा होता है यानी बादल बनने, बारिश बढ़ाने में मदद करता है। जबकि इसके विपरीत यानी पश्चिम हिस्सा ठंडा और पूर्वी हिस्सा गर्म हो तो यह नेगेटिव आईओडी कहलाता है और यह मानसून को रोकता है। 2025 में अभी आईओडी भी न्यूट्रल है। मौसम वैज्ञानिकों का कहना है कि अगस्त-सितंबर तक यह हल्का पॉजिटिव हो सकता है, जो मानसून को और बढ़ा सकता है।

जेट स्ट्रीम में बदलावः मानसून की हवाएं यानी ऊपरी स्तर की हवाओं में बदलाव से भूमध्य रेखा के ऊपर से हवाएं तेजी से भारत की ओर चलती हैं, जिससे नमी से भरी हवाएं पहले पहुंचकर मानसून जल्दी ले आती हैं। एक्सपर्ट्स का मानना है कि सोमाली जेट हवाएं मॉरीशस और मेडागास्कर से उठती हैं। जो सीधे अरब सागर से होते हुए भारत के पश्चिमी तट यानी केरल, कर्नाटक, गोवा और महाराष्ट्र तक आती हैं। 2025 में ये हवाएं असामान्य रूप से तेज हैं।

ग्लोबल वार्मिंग से बदला मानसून पैटर्नः ग्लोबल वार्मिंग की वजह से वातावरण और महासागरों का तापमान लगातार बदल रहा है। यह बदलाव मानसून के समय और तीव्रता को सीधे प्रभावित करता है। इससे उसका चक्र बदल जाता है। इसके अलावा बीते मई महीने में अरब सागर और बंगाल की खाड़ी में भारी नमी देखी गई, जिससे बादलों को बनने में ज्यादा देर नहीं लगी। इसके साथ कर्नाटक-गोवा तट के पास बने साइक्लोनिक सिस्टम की वजह से मानसून जल्दी आ गया। *

मानसून के प्रकारः भारतीय मानसून उन हवाओं को कहते हैं, जो ग्रीष्म ऋतु में तापमान ज्यादा होने के कारण बंगाल की खाड़ी, हिंद महासागर और अरब सागर में नमी के बढ़ने से सक्रिय हो जाती हैं। ये हवाएं दक्षिण-पश्चिम और दक्षिण-पूर्व से उत्तर-पूर्व की ओर चलती हैं और ठंड के दिनों में विपरीत दिशा की ओर यानी समुद्र की ओर बहती हैं। इसके आधार पर भारत में मानसून मूलतया दो तरह के होते हैं। दक्षिण-पश्चिमी मानसून (जून से सितंबर तक) ये मानसूनी हवाएं भारत में सामान्यतया एक जून को सबसे पहले केरल में प्रवेश करती हैं और वहां बारिश करती हैं। इसके बाद यह धीरे-धीरे उत्तर दिशा में बढ़ता है। फिर जून का अंत तक आते-आते यह देश के ज्यादातर हिस्सों पर छा जाती है। उत्तर-पूर्वी मानसून, ऋतु-परिवर्तन होने पर ये हवाएं विपरीत दिशा की ओर यानी समुद्र की ओर बहती हैं। ये हवाएं आमतौर पर सितंबर-अक्टूबर माह तक वापस चली जाती हैं।

चिंतन / यशवंत कोठारी

भारतीयता के मूल में निहित पर्यावरण संरक्षण

भारतीय संस्कृति या कहें भारतीयता में प्रारंभ से ही पर्यावरण को अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है। हमारी संस्कृति में वृक्ष, पेड़-पौधों, जड़ी-बूटियों को देवता माना गया है। पवित्र और देवतुल्य वृक्षों की प्राचीन परंपरा भारतीयता के साथ गुंथी हुई है। वास्तव में भारतीयता किसी व्यक्ति विशेष से नहीं प्रकृति, पर्यावरण, सांस्कृतिक चेतना और विरासत से जुड़ी हुई है। तमाम विविधताओं के बावजूद भारतीयता के रक्षकों, पोषकों ने वृक्षों को पूजने की, उन्हें आदर देने की एक ऐसी परंपरा आरंभ की, जो भारतीयता में रच-बस गई है। वृक्षों के महत्व को प्रतिपादित करते हुए हमारी संस्कृति में अनेक परंपराएं और प्रथाएं विकसित की गईं जो वृक्षों, पर्यावरण, संस्कृति, सुहाग, पूजा-पाठ, धार्मिक अनुष्ठान आदि से जोड़ दी गईं। ये सभी चीजें कालांतर में भारतीयता का पोषण करने वाली सिद्ध हुईं।

पेड़-पौधों की करते हैं पूजाः देश के कुछ आदिवासी क्षेत्रों में विवाह के समय वर-वधु एक पौधा लगाते हैं। माना जाता है कि जैसे-जैसे वृक्ष हरा-भरा होकर विकसित होता है, दांपत्य जीवन में भी सुख और संपन्नता बढ़ती जाती है। बड़ के पेड़ को सुहाग प्रदान करने वाला माना गया है। उत्तर भारत में वट वृक्ष की पूजा का त्योहार मनाया जाता हे। पीपल के वृक्ष पर भगवान विष्णु का वास माना जाता है। पलाश के वृक्ष के नीचे शीतला माता का वास माना गया है। इसी प्रकार आंवला, तुलसी, केला आदि कई पौधों की पूजा-अर्चना का विधान भारतीय संस्कृति में मौजूद है। यह भारतीयता का एक मोहक रूप है। पीपल के वृक्ष को रामायण में भी मान्यता दी गई है। तुलसी की पवित्रता, औषधीय उपयोगों और महत्व के बारे में कई प्राचीन पुस्तकों में वर्णन मिलता है।

इससे सिद्ध होता है कि भारतीय संस्कृति में तुलसी के पौधे को कितना महत्वपूर्ण पौधा माना जाता रहा है। भारतीयता की अनेक विविधताओं के बावजूद वृक्षों का संरक्षण, उनकी पूजा-अर्चना का विधान है।

भारतीयता का अरण्य उत्सवः वृक्षों के प्रति हमारी यह श्रद्धा अनादिकाल से चली आ रही है। अरण्ये ते पृथिवि स्येनमस्तु। अर्थात हे पृथ्वीमाता, तुम्हारे जंगल, हमें आनंद, उत्साह से भर दें। यही श्रद्धा और आदर का भाव बार-बार हमें भारतीयता की मूल भावना से भी जोड़ता है। भारतीयता, जो हम सभी के जीवन से जुड़ी हुई है। भारतीयता यानी हरी-भरी वसुंधरा, हरियाली से सजे वनप्रदेश, कामदेव का वसंत, चटकते फूल, श्रंगार से ओत-प्रोत वन, मादक गंधयुक्त समीर, आजादी से उड़ते पक्षी, कोयल की मीठी वाणी, कुंलाचें भरते हिरण, नाचते मोर, झरने, झीलें, कलकल करती नदियां, ये सभी सुंदर पर्यावरण बनाते हैं और बनाते है भारतीयता का एक संपूर्ण फलक। फलक में उपस्थित होते हैं अनेक प्रकार के रंग। प्रकृति का यह उत्सव भारतीयता का मौलिक स्वरूप है। शायद ही विश्व के अन्य किसी भाग या देश की संस्कृति में पर्यावरण को इतना महत्वपूर्ण माना गया है।

हम समझें अपने दायित्वः प्राचीन काल में हुए हमारे ऋषि-मुनियों ने भारतीयता की महक से परिपूर्ण पर्यावरण की कल्पना की थी। यदि किसी वृक्ष को काटना बहुत ही जरूरी हो जाता तो वृक्ष पर रहने वाले पशु-पक्षियों से क्षमा याचना कर मंत्र पढ़ कर सर्वजनहिताय वृक्ष को काटा जाता था। पर्यावरण के संतुलन को बनाए रखने, उसे पूर्ण रूप से प्रकृति के अनुकूल रखने तथा विकास के साथ एक तादात्म्य और सामंजस्य रखने की प्रेरणा भारतीयता देती है। प्राचीन शास्त्र, साहित्य, संस्कृति, कला जो कुछ भी इस भारत भूमि पर विद्यमान रहा वह सब भारतीयता से परिपूर्ण है और यही बात प्रकृति, पर्यावरण तथा वातावरण पर भी लागू होती है। यह बेहद खेद का विषय है कि भौतिकवादी उपभोक्ता संस्कृति ने सभी प्राचीन भारतीय मूल्यों को नष्ट कर दिया है। प्रकृति के संरक्षण की बात कोई नहीं करना चाहता है। लेकिन हम सब कभी न भूलें कि अपने अस्तित्व को बचाए रखने के लिए भी पेड़-पौधों को लगाना, उनका संरक्षण करना, जीव-जंतुओं, पेड़-पौधों की रक्षा सब कुछ हमारा नैतिक दायित्व है, भारतीयता का कर्तव्य है। अगर हम इस कर्तव्य को पूरा कर सकें तो एक शस्य श्यामला हरित भूमि हमारे चारों ओर मुस्कुराएगी। *

कविता
अलका सोनी

नदी सबको देती है

नदी सबको देती है
बहुत कुछ...
जल, जंगल, जमीन
मछलियां, सूर्य को
अर्घ्य देने की जगह।
उसी तरह उसने
मुझे भी बहुत कुछ दिया
लेकिन मैंने देर से
देखा और समझा यह सब।
तब आश्चर्य हुआ कि
वो तब भी देती रहती है
जब हम नहीं जानते
उसका देते जाना।
यह सब देख
मन में आने लगती है
बस एक ही बात कि
नदी जो सबको देती है
कुछ न कुछ
बदले में पाती है
उसे नहीं समझे
जाने की
कई वजहें।

लघुकथाएं

मेरे नाम का पेड़

उसने मेरी बात काटते हुए अचानक पूछा, 'यह बताइए, क्या आपने अपने जीवन में कोई पेड़ लगाया है?'

मैंने सिर पर हाथ फेरा, बगलें झांकीं, तभी सन्नाटे को चीरती उसकी आवाज आई, 'आठ मन लकड़ी का बोझ सिर पर उधार लेकर जाओगे ऊपर?'

'तुमने जो इतने सारे पेड़ लगा रखे हैं। एक हमारे नाम का भी लगा दो।' मैंने बचना चाहा। वह मुझे और जलील न करे इसलिए मैंने बात घुमाई, 'अरे याद आया। एक बरगद के पेड़ की पौध तुमने मेरे नाम से खरीदी थी, उसका क्या हुआ?'

वह कुछ आश्चर्य से बोली, 'अब पंद्रह साल बाद तुम्हें उसकी याद आ रही है?'

'आखिर बताओ तो हुआ क्या था?' मैंने जोर देकर पूछा। 'उसकी तो कहानी हो गई थी।' वह बोली।

'हुआ क्या था?' मुझे उत्सुकता हुई।

'वो पापा की नजर उस पौधे पर पड़ी तो पूछ बैठे कि तो तुम ले ही आईं बरगद। चलो, मैं इसे अभी गांव के बाहर मेन रोड पर रोप देता हूं।' उसने कहानी बताई।

'तुमने कहा नहीं कि यह मेरे नाम का पेड़ है, किसी की अमानत है।' मैंने कहा।

'मुगले आजम के सामने मुंह खोलना इतना आसान था क्या? वो तो सीधे चिनवा देते।' वह कंधे उचका कर बोली। थोड़ी देर खामोशी रही फिर उसने धीरे से कहा, 'सच बताऊं, जब भी मैं गांव जाती हूं और इंट्री पर वह बरगद का पेड़ थके-हारे लोगों को अपने साए की आगोश में समेटे दिखता है तो मैं कार रुकवा कर पेड़ देर तक निहारती हूं। किसी ने यात्रियों की सेवा के लिए एक चाय-पान की गुमटी भी डाल ली है। प्रधान जी ने गर्मी में प्यासों के वास्ते एक हैंडपंप भी लगवा दिया है। किसी दिन आप भी मेरे साथ चलिए, आपको पेड़ देखकर बहुत खुशी होगी।'

मैं सोचने लगा कि मरने के बाद बरगद की लकड़ी से जलाया जाता है कि नहीं? *

-प्रेमेंद्र श्रीवास्तव

विज्ञापन

एक व्यक्ति ने अखबार में विज्ञापन छपवाया, 'पांच साल का यह लड़का, जिसकी फोटो दी जा रही है, कल शाम से घर से लापता है। किसी को यह बच्चा दिखाई दे या मिले तो दिए गए फोन नंबर पर सूचित करें। सूचना देने वाले को उचित इनाम दिया जाएगा।'

दूसरे दिन ही उस व्यक्ति के फोन की घंटी बजी। आवाज आई, 'आपने अखबार में बच्चे की गुमशुदगी का विज्ञापन दिया है। उसी के संबंध में बताना चाहता हूं कि आपका बच्चा कल से मेरे पास है, आप तुरंत आकर ले जाएं।' 'आप कौन बोल रहे हैं और कहां से बोल रहे हैं?' व्यक्ति ने जल्दी से पूछा।

'मैं सुखद वृद्धाश्रम से रघुबीर बोल रहा हूं...।' जवाब मिला।

यह सुनकर व्यक्ति की आंखें नम हो गईं। उसने तुरंत अपनी पत्नी से कहा, 'गुड्डू मिल गया है, वह वृद्धाश्रम में अपने दादा जी के पास है।' *

-गोविंद भारद्वाज

पत्रिका चर्चा / विज्ञान भूषण

प्रेम का साहित्यिक प्रवाह

नवोदित प्रवाह पत्रिका का वार्षिकांक प्रेम विशेषांक के रूप में प्रकाशित होकर आया है। यह अंक नामचीन और नवोदित लेखकों की रचनाशीलता से भरा-पूरा है। यहां संकलित रचनाओं के द्वारा प्रेम के मनोवैज्ञानिक विवेचन, उसके दार्शनिक पहलू, उसकी ऐंद्रिक व्याख्या और उसकी आत्मानुभूति के अलग-अलग आयामों से रूबरू हुआ जा सकता है। वैसे तो इस अंक में प्रेम पर अच्छी कहानियां, लघुकथाएं, समीक्षाएं और लेख पठनीय हैं ही, लेकिन खासतौर पर काव्य खंड बहुत ही समृद्ध है। इसमें प्रेमाधारित कई बेहतरीन कविताएं, गजलें, दोहे और गीत पाठक को प्रेमरस से सराबोर कर देते हैं। लाजवाब गीत और गजल खंड के अलावा कविता खंड में आलोक धन्वा, अच्युतानंद मिश्रा, अल्पना सिंह और आरती आस्था की कविताएं मन में ठहर जाती हैं।

विभिन्न भारतीय भाषाओं में लिखी गई प्रेम कविताओं के अनुवाद ने इस अंक को संग्रहणीय बना दिया है। कृष्ण बिहारी, जितेन ठाकुर और रेणु हुसैन की कहानियां विशेष रूप से पठनीय हैं तो प्रेम पर अलग-अलग कोणों से लिखे गए लेखों में प्रेम की शाश्वतता को सलीके से व्यक्त किया गया है। *

पत्रिकाः नवोदित प्रवाह (वार्षिक पहल 2025-प्रेम विशेष), **प्रधान संपादकः** रजनीश त्रिवेदी 'आलोक', **मूल्यः** 100 रुपए, **संपादकीय कार्यालयः** देहरादून, उत्तराखंड

इन गर्मी की छुट्टियों को बिताने के लिए अगर आप किसी प्राकृतिक, शांत, सुरम्य स्थान पर जाना चाहते हैं, तो माउंट आबू आपके लिए परफेक्ट डेस्टिनेशन हो सकता है। यहां आपको ऐतिहासिक मंदिर, प्राकृतिक झीलों के साथ-साथ कई मनोरम नजारे देखने को मिलेंगे।

प्राकृतिक सौंदर्य-आध्यात्मिक सुकून का संगम माउंट आबू

सैर-सपाटा
अंशु सिंह

प्राकृतिक सुंदरता और अध्यात्म का अनुपम संगम स्थल है राजस्थान का हिल स्टेशन माउंट आबू। मरुस्थल की वीरानियत में एक शीतल तपोभूमि, जहां बिखरी है अरावली की हरियाली। फैला है, नक्की झील का अप्रतिम सौंदर्य। प्रदेश का एकमात्र हिल स्टेशन, जिसका कण-कण कर लेता है सम्मोहित। गर्मी हो, सर्दी या हो बरसात, माउंट आबू में हर मौसम का है अपना अलग आनंद...।

अरावली के मध्य बसा: अरावली पर्वत श्रंखला के मध्य में बसे माउंट आबू में प्रकृति का जनमानस के साथ कुछ ऐसा सामंजस्य स्थापित है कि 'अद्भुत' के अतिरिक्त अन्य शब्द नहीं सूझता। यहां के वायुमंडल में ही पसरी है सुकून और शांति। मौसम का ताप भी मनोनुकूल नर्म है। रेगिस्तानी राज्य के अन्य हिस्सों की तरह गर्म नहीं है यह स्थान। आखिरकार, प्रदेश का यह एकमात्र हिल स्टेशन जो है। सिरोही जिले में स्थित इस पठारी क्षेत्र को कुदरत ने नदी, झील, झरने सभी की सौगात दे रखी है। यह प्रदेश का सिरमौर है, जिसे भारत ही नहीं, संसार की प्राचीनतम पर्वत श्रंखलाओं में से एक अरावली, उत्तर से दक्षिण दो हिस्सों में विभाजित करती है। केंद्रीय वन एवं पर्यावरण मंत्रालय ने पर्यावरणीय दृष्टिकोण से इसे संवेदनशील क्षेत्र भी घोषित कर रखा है।

भारत की आध्यात्मिक भूमि: माउंट आबू ऐतिहासिक काल से ही अलग-अलग धर्मावलंबियों की कर्मभूमि और तपोभूमि रहा है। आज भी यह स्थान हिंदू और जैन धर्मावलंबियों का पवित्र तीर्थस्थल है। कथानुसार, जैन धर्म के 24वें तीर्थंकर भगवान महावीर माउंट आबू आए थे, जिसके बाद से यह जैन अनुयायियों का विशेष तीर्थस्थान बन गया है। माउंट आबू का प्राचीन नाम अर्बुदांचल है। पुराणों में इसका उल्लेख अर्बुदा अरण्य (अर्थात अर्बुदा के वन) के नाम से भी मिलता है। बाद में यही 'अर्बुदा', 'आबू' में परिवर्तित हो गया। ऐसी मान्यता है कि ऋषि वशिष्ठ का जब विश्वामित्र से मतभेद हो गया था, तब वे माउंट आबू के दक्षिणी भाग में आकर बस गए थे। उन्होंने पृथ्वी से असुरों के विनाश के लिए यहां यज्ञ का आयोजन भी किया था। इनके अलावा, आध्यात्मिक संस्थान ब्रह्माकुमारीज का अंतरराष्ट्रीय मुख्यालय भी यहां स्थित है।

मनमोहक नक्की झील: पहाड़ों की छांव और अरावली की हरियाली के मध्य मचलती अति रमणीय नक्की झील को माउंट आबू का दिल कहा जाता है। 11000 मीटर की ऊंचाई पर स्थित ढाई किलोमीटर लंबी यह झील कौतुहल पैदा करती है। एक किंवदंती के अनुसार, रसिया बालम नामक शिल्पकार और तत्कालीन राजा की बेटी एक-दूजे से प्रेम करते थे। लेकिन राजा की शर्त थी कि अगर शिल्पकार एक रात में झील की खुदाई कर देता है, तो वह अपनी पुत्री उससे ब्याह देंगे। रसिया ने यह चमत्कार कर दिखाया। हालांकि बाद में राजा ने अपनी बेटी उसे देने से इंकार कर दिया। दूसरी कथा के अनुसार, देवताओं ने बाली राक्षस से रक्षा के लिए अपने नाखूनों से इस झील का निर्माण किया था। इसलिए इसका नाम नक्की झील पड़ा। गरासिया जनजाति के लिए यह पवित्र झील आस्था की प्रतीक है।

बहुत प्रसिद्ध है सनसेट प्वॉइंट: फिल्म 'कयामत से कयामत तक' का एक खूबसूरत संवाद है, 'इस डूबते हुए सूरज ने हमें पहली बार मिलाया था। यही हमें एक दिन हमेशा के लिए मिला देगा।' अभिनेता आमिर खान और जूही चावला के इस संवाद में जिस 'डूबते हुए सूरज' का जिक्र हो रहा, वह यहीं माउंट आबू के सनसेट प्वॉइंट पर शूट की गई थी। यहां पास ही में स्थित हनीमून प्वॉइंट नव विवाहितों का पसंदीदा स्थान है। माउंट आबू आने वाले पर्यटकों के लिए सनसेट प्वॉइंट रोमांच से भरपूर एक ऐसा मनोरम स्थल है, जहां से पल-पल रंग बदलते आकाश एवं बादलों की ओट में छिपते-ढलते सूर्य के विस्मयकारी दृश्य को देखा जा सकता है। यहां आने वाले पर्यटक इन नजारों को अपनी यादों के साथ-साथ अपने कैमरे में भी जरूर कैद करते हैं।

विश्व प्रसिद्ध दिलवाड़ा जैन मंदिर: अपनी माउंट आबू यात्रा के दौरान आप दिलवाड़ा जैन मंदिर अवश्य जाएं। 11वीं से 13वीं शताब्दी के दौरान निर्मित दिलवाड़ा जैन मंदिर, जैन वास्तुकला का उत्कृष्ट उदाहरण है। मंदिर का प्रवेशद्वार गुंबद वाले मंडप से होकर गुजरता है। सामने एक वर्गाकार भवन है, जिसमें छह स्तंभ और दस हाथियों की प्रतिमाएं हैं। पांच मंदिरों के इस समूह में विमल शाह द्वारा निर्माण कराया गया मंदिर, सबसे पुराना है, जो जैन धर्म के प्रथम तीर्थंकर को समर्पित है। इसके अलावा, 22वें तीर्थंकर नेमिनाथ को समर्पित लून वासाही मंदिर भी दर्शनीय है। यहां एक अद्भुत देवरानी-जेठानी मंदिर भी है, जिसमें भगवान आदिनाथ एवं शांतिनाथ जी की मूर्तियां स्थापित हैं। संपूर्ण मंदिर एक प्रांगण के अंदर घिरा हुआ है, जिसमें छोटे स्तंभों की दोहरी पंक्तियां हैं। यहां

फूल-पत्तियों और अन्य मोहक डिजाइनों से अलंकृत, नक्काशीदार छतें, पशु-पक्षियों की शानदार आकृतियां, सफेद स्तंभों पर बारीकी से उकेरी गई बेलें, जालीदार नक्काशी से सजे तोरण और जैन तीर्थंकरों की प्रतिमाएं हैं।

पीस पार्क में प्रकृति का आनंद: ब्रह्मा कुमारी का पीस पार्क, विविध प्रजातियों के पेड़-पौधों के बीच आपको एक अलग ही जगत में होने का एहसास कराएगा। यहां फूलों के साथ-साथ फलों के भी उद्यान हैं। यहां गुलाब, नीबू, बांस समेत अनेक वृक्ष देखे जा सकते हैं। खूबसूरत रॉक गार्डन एवं अन्य लैंडस्केपिंग को देखना भी कम दिलचस्प नहीं है। पार्क में ध्यान के लिए विशेष कोना भी है। *

कैसे जाएं: माउंट आबू का सबसे निकटतम हवाई अड्डा उदयपुर 185 किलोमीटर, जबकि अहमदाबाद 235 किलोमीटर दूर है। सबसे नजदीकी रेलवे स्टेशन आबू रोड 28 किलोमीटर की दूरी पर है, जो अहमदाबाद, दिल्ली, जयपुर और जोधपुर से जुड़ा है। यह सड़क मार्ग से देश के सभी प्रमुख शहरों से जुड़ा है। दिल्ली के कश्मीरी गेट बस अड्डे से माउंट आबू के लिए सीधी बस सेवा उपलब्ध है। राजस्थान राज्य सड़क परिवहन निगम की बसें दिल्ली के अलावा अन्य शहरों से माउंट आबू के लिए अपनी सेवाएं मुहैया कराती हैं।

कब जाएं: आप गर्मी या सर्दी कभी भी यहां जा सकते हैं। नवंबर से फरवरी के बीच यहां सर्दी का मौसम होता है। काफी पर्यटक आते हैं। इसके अलावा, अप्रैल से जून के बीच भी यहां घूमने जाया जा सकता है। अगर मानसून का मजा लेना है, तो जुलाई से सितंबर के महीने में यहां की योजना बना सकते हैं।

किसी को उबासी लेते देख आपको भी जम्हाई आने लगती है, है ना! वास्तव में कुछ आदतें, हरकतें या प्रतिक्रियाएं ऐसी होती हैं, जो किसी दूसरे को करते देख, ठीक वैसा ही करने के लिए हमारा भी मन मचल उठता है। ऐसा क्यों होता है, जानिए।

इन एक्टीविटीज को देख मन अपना भी मचलता है!

जीवनशैली
शिखर चंद जैन

कई बार अनजाने में दूसरे की किसी एक्टिविटी को देखकर हम भी वैसा करने लगते हैं या वैसा करना चाहते हैं। व्यवहार विशेषज्ञों, समाजशास्त्रियों और हेल्थ एक्सपर्ट्स ने कुछ ऐसी इश्यूज का पता लगाया है। आप भी इनके बारे में जानिए।

फ्रेंड जैसे सामान: 'जर्नल ऑफ न्यूरोसाइंस' में प्रकाशित एक शोध के मुताबिक लोगों को उस चीज की सबसे ज्यादा चाह होने लगती है, जो उनके किसी प्रियजन या मित्र के पास हो। भले ही आपके पास पहले ही एक से एक टी-शर्ट, सलवार सूट या फुटवेयर हों, लेकिन फ्रेंड के पास कोई नया पेयर देखते हैं, तो आपका भी मन मचल उठता है। मनोवैज्ञानिक कहते हैं, 'हम किसी चीज के स्वामित्व को जब सेल्फ एस्टीम से जोड़कर देखने लगते हैं, तब ऐसी इच्छा जाग्रत हो जाती है।' कई बार हम इन चीजों को प्रेस्टीज इश्यू बना लेते हैं।

बालों पर हाथ फेरना: व्यक्तित्व विकास के विशेषज्ञ ग्लेन विल्सन ने अपनी किताब 'इंट्रोड्यूसिंग बॉडी लैंग्वेज: ए प्रैक्टिकल गाइड' में लिखा है कि दो व्यक्ति जब एक-दूसरे से व्यक्तिगत बातें कर रहे होते हैं, तो उनमें एक-दूसरे को देखकर अपने बालों में हाथ फेरने या अपने बालों से खेलने की इच्छा बलवती हो उठती है। इस स्थिति को मनोवैज्ञानिक 'सिंक्रोनी' या

'पोश्चरल ईको' कहते हैं। इनका कहना है कि हम अपने सोशल बिहेवियर का काफी कुछ अपने नजदीकी लोगों से देखकर सीखते हैं, इसलिए, जाने-अनजाने में हम उनकी बॉडी लैंग्वेज की नकल कर बैठते हैं।

खुजली की तलब: एक अध्ययन के मुताबिक अपने सामने मौजूद किसी व्यक्ति को सिर या कान खुजलाते हुए देखने पर वहां मौजूद दूसरे लोगों को भी ऐसा करने की इच्छा करती है। मनोवैज्ञानिक कहते हैं, 'हमारे अवचेतन मन में किसी को खुजली करते देख या जम्हाई लेते देख, ऐसा दोहराने की स्वाभाविक प्रवृति होती है। ऐसा ही किसी को पानी पीते देखकर या टॉयलेट के लिए उठता देखकर किसी सार्वजनिक स्थान (जैसे सिनेमा हॉल, क्लास रूम या स्टेडियम) में होता है।

खुद को बीमार महसूस करना: कभी आपके साथ ऐसा जरूर हुआ होगा कि आपके किसी मित्र ने अपनी बीमारी के कुछ लक्षण आपको बताएं हों और आपने भी वैसा ही महसूस किया हो। रिसर्च बताते हैं कि हम दूसरों से 'डर' बहुत जल्दी पिकअप कर लेते हैं। आपने देखा होगा कि कई बार लोग बिना कारण जाने ही कुछ लोगों को सड़क पर दौड़ते देख, खुद भी दौड़ने लगते हैं। पेनसिलवेनिया विवि के मनोवैज्ञानिक लौरेन नेपोलिटानो कहते हैं, 'आप एक साधारण उदाहरण से इसे समझ सकते हैं। किसी संगीत समारोह में बेहद तेज संगीत को जब आप दूसरों को एंज्वॉय करते देखते हैं, तो खुद भी इसे एंज्वॉय करने लायक समझते हैं लेकिन पांच-दस लोग इसके 'लाउड' होने की शिकायत करते हुए कान पर हाथ धरते दिख जाते हैं तो आप भी अपने कान ढंक लेते हैं।

तनाव महसूस करना: 'सोशल न्यूरोसाइंस' जर्नल में प्रकाशित एक रिसर्च के मुताबिक सहकर्मी का तनाव देखकर अगल-बगल मौजूद दूसरे लोगों में भी स्ट्रेस हार्मोन रिलीज होने लगता है। दूसरे को टेंशन या तकलीफ में देखकर दुखी या तनावग्रस्त होना मानवीय प्रवृति है। ठीक ऐसा ही क्रोध के मामले में भी होता है। दूसरे का क्रोध देखकर हम भी उत्तेजित हो जाते हैं और क्रोध भरे स्वर में बात करने लगते हैं। यूनिवर्सिटी ऑफ विस्कोंसिन-मेडिकल की शोधकर्ता एलिजाबेथ क्रुसमार्क के अनुसार, 'भावनात्मक संक्रामकता शरीर में घटित होने वाले केमिकल सिग्नल्स की वजह से उत्पन्न होती है। यही वजह है कि किसी को तनाव, क्रोध या बेचैनी में देखकर हम भी वैसा ही महसूस करने लगते हैं।'

कम या ज्यादा भोजन करना: कई अध्ययनों में पाया जा चुका है कि किसी रेस्तरां या पार्टी में आप अगर ज्यादा भोजन करने वाले लोगों के साथ हैं, तो आप भी ज्यादा मात्रा में भोजन कर लेते हैं। यूनिवर्सिटी ऑफ कैलिफोर्निया में 12,000 से ज्यादा लोगों पर किए अध्ययन में पाया गया कि किसी समूह का एक व्यक्ति 'मोटा' हो जाए तो उसके नजदीकी लोगों में मोटापे की संभावना 57 फीसदी बढ़ जाती है। ठीक ऐसा ही सेहत के प्रति जागरूक और संयमित खान-पान करने वालों के साथ रहने से होता है। *

हंसना या मुस्कुराना

किसी सामूहिक कार्यक्रम के दौरान दूसरों को ठहाके मार कर देखना या एक व्यक्ति को मुस्कुराते हुए देखना स्वतः ही दूसरे लोगों को भी ठहाके मारने या मुस्कुराने के लिए प्रेरित कर देता है। खुशी या सकारात्मक प्रतिक्रिया भी उसी तरह दूसरों को प्रेरित करती है जैसे नेगेटिव एक्टिविटी करती है। मनोवैज्ञानिक कहते हैं हर क्रिया की प्रतिक्रिया इंसानी स्वभाव है। अगर कोई व्यक्ति आपको देखकर अच्छी टिप्पणी करता है, खुश होता है या मुस्कुराता है, तो आप खुद-ब-खुद ऐसा करने लग जाते हैं।

अनेक अध्ययनों से साबित हुआ है कि हमारी लापरवाही से प्रदूषित हो रहे वातावरण से अनेक बीमारियां पनप रही हैं। हम अपने पर्यावरण को प्रदूषणमुक्त बनाकर, सही जीवनशैली अपनाकर ही स्वस्थ रह सकते हैं। इसके लिए प्रयास हमें ही करने होंगे।

पर्यावरण बनाएं प्रदूषणमुक्त आप रहेंगे स्वस्थ-ऊर्जावान

दायित्व
डॉ. राकेश 'चक्र'

वर्षों से अनेक वैज्ञानिक अध्ययन इस बात को इंगित कर रहे हैं कि हम इंसान ही अपने पर्यावरण को प्रदूषित करते जा रहे हैं। यह जानते हुए भी कि यह प्रवृत्ति हमें विनाश की ओर ले जा सकती है, प्रकृति और पर्यावरण के विरुद्ध गैर जिम्मेदाराना कार्यशैली अपनाकर उसे प्रदूषित करते ही जा रहे हैं।

हमारी लापरवाही है जिम्मेदार: यह बहुत चिंता का विषय है कि हम अपनी रोजमर्रा की कार्यशैली से पर्यावरण को प्रदूषित करते जा रहे हैं। हमने प्रकृति के पंच तत्वों-अग्नि, वायु, आकाश, पृथ्वी और जल को प्रदूषित करके भारी नुकसान पहुंचाया है और निरंतर पहुंचाते ही जा रहे हैं। हालात यह हो चुके हैं कि पानी को आरओ से शुद्ध करके पीना पड़ रहा है या फिर फिल्टर्ड पानी की बोतल खरीदनी पड़ रही है। कैंसर के रोगियों में निरंतर वृद्धि हो ही रही है। पैदल चलना अब शान-शौकत के विरुद्ध माना जाता है। पचास-सौ मीटर के लिए भी वाहन का प्रयोग किया जाता है। इसी सुविधाभोगिता के चलते रोग और रोगियों का ग्राफ बढ़ रहा है।

हालात हो जाएंगे गंभीर: अगर हालात यही रहे, तब निकट भविष्य में हमें श्वास लेने के लिए हमेशा मास्क पहन कर चलना पड़ेगा। कदाचित अब जल्दी ही ऐसा भयावह समय आने वाला है कि हमें ऑक्सीजन का सिलेंडर साथ में लेकर चलना पड़ेगा, तब कहीं हम श्वास लेकर जीवित रहने के लिए संघर्ष कर पाएंगे। ऐसे में हमें चिंतन-मनन करना ही होगा कि हम किस दिशा और दशा की ओर बढ़ रहे हैं? इसमें सुधार के लिए पर्यावरण को स्वच्छ करने की शुरुआत हमें स्वयं से ही करनी होगी। यह तभी हो सकता है, जब हम अपने मन से पूरी तरह संकल्पित हो जाएं।

ऐसे करें खुद से शुरुआत: आने वाली भयावह स्थितियों से बचने के लिए सबसे पहले तो हम अपनी दिनचर्या में ही आमूल-चूल परिवर्तन करें। आहार-विहार को प्रकृति के अनुकूल ढालें। सुविधाभोगिता की वस्तुओं का प्रयोग उतना ही करें, जितना अतिआवश्यक हो। अपने आस-पास तुलसी, मनीप्लांट, स्नेकप्लांट, नीम, पीपल आदि के पौधे अधिक से अधिक रोपें और देखभाल करें। सुविधाभोगिता में कटौती करके ही बिजली की बचत की जा सकती है। 'एसी संस्कृति' भयावह प्रदूषण की ओर ले जा रही है। हम न भूलें एसी में प्रयुक्त होने वाली गैस वातावरण को प्रदूषित करती है। इसलिए जहां तक संभव हो एसी का प्रयोग न करें या बहुत सीमित मात्रा में करें।

स्वच्छता का रखें ध्यान: अपने घर के आस-पास सड़क और पार्क की स्वच्छता का भी ध्यान रखें। घर की रसोई से निकलने वाले सब्जियों और फलों के छिलके, चाय पत्ती आदि का खाद बनाएं, वह आसानी से बन जाता है। इसका तरीका यही है कि छिलके आदि को खाली गमले, प्लास्टिक के कट्टे या अनुउपयोगी बाल्टी, डब्बे आदि में भरते जाएं। जब वह आधा भर जाए तो उसमें ऊपर से मिट्टी भर दें। दो चार दिन थोड़ा-थोड़ा पानी डाल दें, मिट्टी के ऊपर कोई भी पौधा रोप दें। पौधा बढ़ता रहेगा और कचरा खाद में परिवर्तित होकर उपयोगी मिट्टी बनता रहेगा।

यथासंभव रोकें प्रदूषण: जरूरी नहीं कि कहीं भी जाने के लिए स्कूटर, बाइक या कार ही निकालें। आस-पास एक डेढ़ किलोमीटर की दूरी दस-पंद्रह मिनट पैदल चलकर तय कर सकते हैं। कुछ अधिक दूरी को साइकिल से भी पूरा कर सकते हैं। इससे हम स्वस्थ भी रहेंगे।

जीवनशैली में करें सुधार: कूड़ा-करकट यथास्थान पर ही एकत्र करें, इधर-उधर न फेंकें। धूम्रपान, गुटखा और मद्यपान आदि से बचें। ये सिर्फ वातावरण को ही नहीं हमारे शरीर के तंत्र को भी प्रदूषित कर देते हैं। *

साल 1975 देश के लिए सामाजिक-राजनीतिक दृष्टि से उथल-पुथल भरा रहा। हिंदी सिनेमा के लिहाज से भी वह वर्ष अभूतपूर्व रहा। उस वर्ष आई उन तीन फिल्मों 'दीवार', 'शोले' और 'जय संतोषी मां' से जुड़ी कुछ रोचक बातों पर एक नजर, जिसने सफलता और कमाई के झंडे तो गाड़े ही, हिंदी सिनेमा को नई दिशा भी दी।

तीन ब्लॉक बस्टर फिल्मों के 50 साल शोले-दीवार-जय संतोषी मां

बड़ा पर्दा / मनोज प्रकाश

अब से पचास साल पहले यानी वर्ष 1975 में सिल्वर स्क्रीन पर तीन ऐसी हिंदी फिल्में रिलीज हुईं, जिसने कमाई और कामयाबी के नए कीर्तिमान स्थापित किए। आपातकाल का वह वर्ष देशवासियों की चेतना में, उनके जीवन में कई तरह के बदलाव लेकर आया। वहीं उस साल रिलीज हुई तीन सुपरहिट फिल्मों ने हिंदी सिने प्रेमियों को मनोरंजन और भक्ति का बेहतरीन तोहफा दिया। वह साल हिंदी फिल्म जगत के लिए मील के पत्थर की तरह रहा। उस साल बॉक्स ऑफिस पर धमाल मचाने वाली तीन फिल्में थीं- 'दीवार', 'शोले' और 'जय संतोषी मां'। 2025 इन तीनों ही फल्मों की रिलीज का स्वर्ण जयंती वर्ष है।

दीवार लिखी सफलता की नई इबारत

वर्ष 1975 में 24 जनवरी को फिल्म 'दीवार' रिलीज हुई। यह उस दौर में एक नई तरह की फिल्म थी। फिल्म का कथानक सामाजिक मुद्दों को उठाते हुए कुछ इस तरह से रचा गया था कि इसने गरीबी, अन्याय, भ्रष्टाचार जैसे मुद्दों को विस्फोटक रूप से पेश किया। फिल्म में दो भाइयों के बीच खड़ी 'दीवार' ने दर्शकों को अपनी तरफ खूब खींचा। इसमें अमिताभ की 'एंग्री यंग मैन' इमेज के दर्शक कायल हो गए। सही अर्थों में इस फिल्म को न्यायप्रिय समाज का प्रतिबिंब कहा जा सकता है। 'दीवार' के डायलॉग्स आज भी सिने-प्रेमियों के बीच लोकप्रिय हैं। 'मैं आज भी फेंके हुए पैसे नहीं उठाता', 'जाओ पहले उस आदमी के साइन लेकर आओ..' जैसे डायलॉग्स सुनते ही सिनेमाघरों में दर्शकों की सीटियां और तालियां गूंजने लगती थीं। अन्याय के खिलाफ लड़ने वाले नायक के रूप में अमिताभ बच्चन को दर्शकों का भरपूर प्यार मिला। इसी फिल्म में शशि कपूर का डायलॉग 'मेरे पास मां है' दर्शकों को इमोशनल कर जाता है।

शोले तोड़े कामयाबी के रिकॉर्ड

15 अगस्त 1975 को रिलीज हुई 'शोले' को हिंदी फिल्म इतिहास के अब तक की सबसे बेहतरीन फिल्मों में से एक के रूप में गिना जाता है। जब यह फिल्म रिलीज हुई तो इसके सफल होने पर ही लोग शक कर रहे थे। लेकिन इस फिल्म को दर्शकों का भरपूर प्यार मिला। फिल्म ने सफलता के सारे रिकॉर्ड तोड़ दिए। इस फिल्म ने सौ सिनेमाघरों में अपनी रिलीज की सिल्वर जुबली और पचास से अधिक में गोल्डेन जुबली का रिकॉर्ड कायम किया। फिल्म निर्माण जगत में यह क्रांतिकारी बदलाव लाने वाली फिल्म मानी जाती है। फिल्म का वह दृश्य जिसमें जय (अमिताभ) वीरू (धर्मेंद्र) को कारतूस लाने के लिए कहता है, उसमें सिक्के का एक ही पहलू अभी तक दर्शकों को रोमांचित कर देता है। जहां कहीं दोस्ती निभाने की बात आती है, वहां जय-वीरू और 'शोले' का सिक्का दर्शक नहीं भूलते हैं। जय का बसंती (हेमा मालिनी) से पूछना, 'तुम्हारा नाम क्या है बसंती?' वीरू का टंकी वाला सीन और 'सुसाइड' वाला डायलॉग। गब्बर (अमजद खान) के डायलॉग्स, 'कितने आदमी थे?', 'तेरा क्या होगा कालिया?', बसंती (हेमा मालिनी) का डायलॉग, 'चल धन्नो, आज तेरी बसंती की इज्जत का सवाल है', ठाकुर (संजीव कुमार) पर फिल्माए गए दृश्य और संवाद। राधा (जया बच्चन) का चुलबुलापन और मौन। 'अंग्रेजों के जमाने के जेलर' (असरानी) और सूरमा भोपाली (जगदीप) के कॉमेडी सींस। फिल्म का एक-एक दृश्य, एक-एक पात्र, एक-एक डायलॉग, एक-एक गीत आज भी सिने प्रेमियों के जेहन में जीवंत है।

जय संतोषी मां जलाई भक्ति की अलख

'दीवार' और 'शोले' ने जहां हिंसा और बदले की भावना को प्रतिबिंबित किया, वहीं 'जय संतोषी मां' ने आस्था, भक्ति और विश्वास की जीत दिखाकर ब्लॉक बस्टर का तमगा हासिल किया। यह फिल्म 'शोले' के साथ ही यानी 15 अगस्त 1975 को रिलीज हुई थी। सामूहिक परिवार की कहानी में भाइयों की आपसी खींचतान के साथ इस फिल्म ने धर्म तथा आस्था का बेजोड़ संगम प्रस्तुत किया। आस्था, विनम्र भक्ति में रची-बसी 'जय संतोषी मां' ने भक्ति फिल्मों के एक ऐसे युग की शुरुआत की, जिसको पचास साल बाद भी भारतीय फिल्म उद्योग और समाज मानक मानकर चलता है। फिल्म में भजन और आरती के समय दर्शक एक साथ खड़े हो जाया करते थे। फिल्म समीक्षक इस बात को प्रमुखता से इंगित करते हैं कि फिल्म की रिलीज के बाद समाज में संतोषी माता के प्रति आस्था में अभूतपूर्व वृद्धि हुई। फिल्म के भजन और आरती- 'मैं तो आरती उतारूं रे', 'यहां-वहां, जहां-तहां, मत पूछों कहां-कहां', 'करती हूं तुम्हारे व्रत मैं', 'मदद करो संतोषी माता' भक्ति संगीत में मील के पत्थर बन चुके हैं। आज भी इस फिल्म के गीत घरों और मंदिरों में भक्तिभाव से गाए, बजाए और सुने जाते हैं। *